भारत सरकार द्वारा विज्ञापनों के लिए मान्यता प्राप्त

आरएनआई पंजीयन RAJHIN/2016/72902

डाक पंजीयन RJ/ UD/ 29-150/ 2020-2022

शब्द रंजन

संस्थापक एवं संरक्षक डॉ. महेन्द्र भानावत

विचार एवं जनसंवाद का पाक्षिक

वर्ष 7 | अंक 11 | उदयपुर बुधवार 15 जून 2022 | पेज 8 | मूल्य 5 रू.

आत्म-बलिदान का बेजोड़ रूप धरना और झंवर

- प्रो. भंवरसिंह सामौर -

धरना पुरुष करते थे तथा झंवर (जौहर) स्त्रियां करती थीं। पुरुष तागा, धागा, कटार की नोक के सिंहासन पर बैठकर तेलिया करते थे। स्त्रियां अपने स्तन काटकर खून छिड़क कर जौहर (झंवर) कर लेती थीं। झंवर (जौहर) या तेलिया अन्तिम विकल्प के रूप में होते थे अन्यथा तागा (बगल में कटारी खाना) या धागा (गले में कटारी खाना) ही होता था।

एक धरने में सवालीस खिड़ियों, पैंतीस रोहड़िया बारहठों, बीस सांदुओं, सतरह रतनुओं, सौलह लालसों, नव आढ़ों, आठ कवियों, सात सिंढ़ायचों, पांच आसियों, चार देवलों, तीन मीसणों, दो बरसड़ों, दोगोडणों (बाप-बेटे), दो देथों, एक किनिया, एक सामौर, एक मेहडू, एक भादा, एक बीठू, एक जगट, एक बणसूर, एक बोगसा, एक दूल्हें के वेश में खिड़िया जो सौदा बारहठों का दामाद बनकर सूर्य के समान तेजस्वी रूप में उदित होकर सम्मिलित हुआ।

धरने से तात्पर्य किसी शक्तिशाली व्यक्ति द्वारा सताने पर व्यक्ति विशेष अथवा समाज के समूह विशेष का देव-विशेष के स्थान पर अभीष्ट उद्देश्य हेतु इस निश्चय के साथ अनशन पर बैठना कि उसके आग्रह की अवहेलना पर आत्म-बलिदान द्वारा प्राणों का त्याग करना है।

धरना समूह की अहिंसक लड़ाई का प्रतीक था। हिंसा का मुकाबला अहिंसा से ही सम्भव है, हिंसा से नहीं। धरना या झंवर (जौहर) निरंकुश शासन या निरंकुश समाज-व्यवस्था से लोहा लेने की वैयक्तिक आकांक्षाओं की सामूहिक अभिव्यक्ति का अपने ढंग का अकेला प्रयोग था। धरना पुरुष करते थे तथा झंवर (जौहर) स्त्रियां करती थीं। वैयक्तिक प्रश्नों की सामूहिक महत्ता के आधार पर ही धरने या झंवर का आयोजन होता था।

धरने व झंवर में आत्म-बलिदान के अलग-अलग रूप होते थे। पुरुष तागा, धागा, कटार की नोक के सिंहासन पर बैठकर तेलिया करते थे। स्त्रियां अपने स्तन काटकर खून छिड़क कर जौहर (झंवर) कर लेती थीं। झंवर (जौहर) या तेलिया अन्तिम विकल्प के रूप में होते थे अन्यथा तागा (बगल में कटारी खाना) या धागा (गले में कटारी खाना) ही होता था।

तेलिया या झंवर करने का तरीका यह होता था कि तेलिया या झंवर करने वाला व्यक्ति या समूह निरन्तर विधिवत चलते चाड़ाऊ काव्य-पाठ रक्षा-दीप व अग्नि की साक्षी में तेलिया या झंवर करने की निश्चित तिथि की घोषणा कर अपने कपड़े तेल से सिंचित करवाता रहता था। विश्वस्त अंगरक्षक सुरक्षा के लिए तैनात रहते थे, जिससे सत न उतर जाए।

नियत तिथि पर सूर्योदय (आधा बाहर व आधा अन्दर) के समय तेलिया करने वाले व्यक्ति या समूह स्वयं अपने हाथ से अग्नि स्नान कर सूर्य के सामने कदम (पाँवड़े) भरते थे। उस समय तेलिया करने वाला व्यक्ति सामूहिक जन-शक्ति का पुंज बन जाता था तथा मुंह से जो भी कह देता था वह फलित हो जाता था।

इसी प्रकार झंवर में अग्नि-स्वरूप बन आत्म-बलिदान कर दिया जाता था। दूसरे को मार देना या दूसरे के हाथ से मर जाना उचित वीरत्व पूर्ण नहीं जितना वीरत्व पूर्व इन शक्ति-पुत्रों एवं पुत्रियों का हर्षोल्लास के साथ उत्सव मनाकर उत्साह के साथ अपने ही हाथों मृत्यु का वरण करना होता था। सचमुच आत्म-बलिदान का यह रूप विश्व में बेजोड़ था।

जोधपुर के खलनायक राजा उदयसिंह द्वारा चारणों के शासनों की मर्यादा के विरूद्ध किये गये कुकृत्य के विरोध में संवत् 1643 वि. के चैत्र माह के सुदि पक्ष में धरने का आयोजन कमलेश्वर महादेव मन्दिर में किया गया। सारे देश के चारण इस धरने में सम्मिलित हुए। धरने में चारणों के प्रति सहानुभूति व्यक्त करने के लिए पुरोहित, ब्राह्मण व अन्य लोग भी सम्मिलित हुए। धरने के प्रति दिखाई गई राजा उदयसिंह की हठधर्मिता के कारण उसकी ऐसी लोक-निन्दा हुई कि उसका नाम ही लोक में अवाच्य घोषित हो गया। कोई भी व्यक्ति उसका नाम जीभ पर लाना अपकृत्य समझने लगा तथा उसे मोटा राजा के नाम से ही सम्बोधित किया जाने लगा।

दो दिनों तक चारणों ने वहां धरना दिया। गोपालदास चम्पावत ने सभी एकत्रित धरनार्थियों को सीरा बनवाकर भोजन करवाया। तीसरे दिन धरनार्थी प्रात:काल ब्रह्म मुहूर्त में नित्यक्रिया से निवृत्त होकर स्नान के बाद तुलसीपत्र व गंगाजल पान कर आत्म-बलिदान हेतु तैयार हुए।

- शेष पृष्ठ सात पर

पोथीखाना

स्वस्थ एवं सुखी जीवन के लिए 'अणुव्रत जीवनशैली'

तेरापंथ धर्मसंघ के नवम आचार्यश्री तुलसी द्वारा प्रतिबोधित अणुव्रत अनुष्ठान से असंख्य लोग जुड़े और स्वस्थ पारिवारिक, सामाजिक एवं राष्ट्रीय चेतना का बीजवपन किया। आजादी के बाद शीर्षस्थ राजनेता से लेकर सामान्य श्रावक ने अणुव्रत की आबोहवा ली। यह धारा अब तो गंगा सी पावन बनती सबको घाट-घाट के ठाठ से सिंचित कर प्रत्येक जन को प्रभावित किये जा रही है। प्रकारान्तर से प्रस्तुत विशेषांक ग्यारहवें आचार्य महाश्रमण की षष्टिपूर्ति अभिवन्दना को भी समर्पित है।

पिछले 67 वर्षों से प्रकाशित मासिक 'अणुव्रत' का मई-जून 2022 का अणुव्रत जीवनशैली विशेषांक सबके लिए जैसे अनिवार्य उपयोगी बनकर प्रकाशित हुआ है। कुल 382 पृष्ठ का यह अंक आर्ट पेपर पर बड़े ही सधे हुए किन्तु कलात्मक संयमित परिवेश लिये विविध विद्वानों, सन्तों, महापुरुषों तथा समाजरत्नों के विचारों, अनुभवों तथा व्यावहारिकता की समता सौहार्द पीठिका लिये विश्व मानव के श्रेष्ठतम का बोधि-स्तूप ही बन पड़ा है।

इसके प्रारम्भ में ही आचार्य तुलसी का उद्‌बोध अणुव्रत की वैचारिक भूमिका को अंगीभूत करता है। उनके अनुसार ''अणुव्रत का दर्शन जीवन के किसी एक ही विकृत दृष्टिकोण के परिमार्जन का लक्ष्य लेकर निर्धारित नहीं हुआ है। आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक, शैक्षणिक, पारिवारिक और वैयक्तिक- सभी क्षेत्रों में घुसी हुई विकृतियों का सुधार करना अणुव्रत का लक्ष्य है।''

अणुव्रत जीवनशैली किसी धर्म, सम्प्रदाय, जाति, वर्ग विशेष की

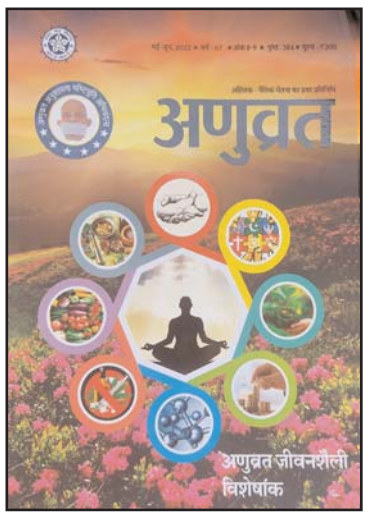

जीवनशैली नहीं है अपितु सबकी जीवनशैली से सबके मंगल कल्याण की वांछा है। इस बाबत विशेषांक में दी गई हकीकत के दरसाव में स्पष्ट कहा गया है- ''अणुव्रत एक सम्पूर्ण जीवनशैली है। यह एक अहिंसक और संयम प्रधान जीवनशैली है जो उपयोगवादी जीवनशैली का एक बेहतरीन विकल्प है। अणुव्रत जीवनशैली जहां व्यक्ति की नैतिक चेतना का जागरण कर स्व-कल्याण का आधार तैयार करती है वहीं समाज और विश्व के कल्याण का मार्ग भी प्रशस्त करती है।'' - पृष्ठ 71

विशेषांक में अणुव्रत की आचार संहिता के सन्दर्भ में विद्यार्थियों से लेकर अध्यापकों, राज्य कर्मचारियों, विधायकों, कार्यकत्ताओं, व्यापारियों ; सबकी व्यक्ति-स्वतंत्रता और मौलिक आधारों के साथ सामुदायिक हित-साधना को लेकर अनेक दृष्टियों से विवेचन, विश्लेषण तथा विलोड़न किया गया है।

अपने मंगल सन्देश में आचार्य महाश्रमण ने अणुव्रत को त्याग एवं संयम का आन्दोलन कहते इस आन्दोलन के प्रवर्तक आचार्य तुलसी का स्मरण करते लिखा- ''अणुव्रत के अनुरूप यदि आदमी की जीवनशैली होती है तो वर्तमान जीवन भी अच्छा बन सकता है और उसका प्रभाव अगले जन्म पर भी पड़ सकता है। आदमी जब अच्छा बन जाये तो समाज, राष्ट्र, विश्व भी अच्छा बन सकता है।''

विशेषांक को अनेक सन्तों, महामनीषियों, विद्वानों के विचारों, चिन्तनों, कहानी-कथनों, गीति-काव्यधाराओं से बड़ा ही उपयोगी और मूल्यवान बनाया है।

इसके सम्पादक संचय जैन तथा उनके होनहार सहयोगियों ने सर्वदृष्टि से इसे कलात्मक उजास देकर समुन्नत बनाया है जिसके लिए वे बधाई के पात्र हैं। अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी, अणुव्रत भवन, 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-110002 से प्रकाशित इसका मूल्य मात्र 200 रूपया है।

- डॉ. तुक्तक भानावत

एक शरारत :

ये देवीलाल सामर हैं

राजस्थान लेखिका सम्मेलन का उदयपुर में आयोजन था। बात है, राजस्थान साहित्य अकादमी के तत्कालीन अध्यक्ष डॉ. प्रकाशजी 'आतुर' के कार्यकाल की। राजस्थान कृषि महाविद्यालय के किसान घर के सभागार में यह आयोजन था। राजस्थान की चर्चित लेखिकाएं यथा श्रीमती सावित्री परमार, डॉ. पन्ना, सावित्री डागा, सरस्वती माथुर, डॉ. प्रभा वाजपेयी, डॉ. रजनी कुलश्रेष्ठ आदि समारोह में आई हुई थीं।

उदयपुर के प्रसिद्ध लेखक नन्द चतुर्वेदी, घनश्याम शलभ, डॉ. आलमशाह खान, डॉ. महेन्द्र भानावत, डॉ. पुरुषोत्तम छंगाणी, देवकर्णसिंह राठौड़, डॉ. देव कोठारी, डॉ. के. के. शर्मा, डॉ. नेमनारायण जोशी, डॉ. राजेन्द्रमोहन भटनागर, डॉ. भगवतीलाल व्यास, डॉ. नवलकिशोर, डॉ. ज्योतिपुंज, कमर मेवाड़ी, किशन दाधीच आदि भी उसमें उपस्थित थे। रतलाम से प्रख्यात लेखिका श्रीमती मेहरून्निसा परवेज भी पहुंची थी। उन्हें संगोष्ठी की अध्यक्षता करनी थी। उस दिन ऑटोरिक्शा की हड़ताल थी। उनके साथ शायद रतलाम के तत्कालीन कलेक्टर श्री शर्माजी थे। मैं उस समय अकादमी सचिव था।

डॉ. आलमशाह खान उग्र जल्दी होते। वे मस्तमौला थे। वे हास्य व व्यंग्य का भी आनन्द भरपूर लेते थे। संगोष्ठी समाप्ति पर हम सभी हॉल से बाहर निकल रहे थे कि डॉ. खान ने परिचय कराते हुए कहा- ये देवीलाल सामर हैं (जबकि उनका निधन हो चुका था)। इशारा डॉ. महेन्द्र भानावत की ओर था। डॉ. महेन्द्र भानावत ठिठके पर मेहरून्निसाजी ने डॉ. भानावत को नमस्ते किया और नन्द बाबू सहित हमारा ठहाका गूंज गया। डॉ. खान तपाक से बोले, 'ये डॉ. महेन्द्र भानावत हैं, आपको स्व. सामरजी लग रहे हैं।' मेहरून्निसाजी एक मिनिट हक्कीबक्की रह गईं पर इसकी गूंज कई दिनों तक तो रही ही रही और आज भी जब हम उस घटना को याद करते हैं तो ठहाकों की गूंज कम नहीं होती।

-डॉ. लक्ष्मीनारायण नंदवाना

महाराणा 'जयसिंहगुणवर्णनम्' पुस्तक विमोचित

उदयपुर (ह. सं.)। महाराणा मेवाड़ चेरिटेबल फाउण्डेशन, उदयपुर के ट्रस्टी लक्ष्यराजसिंह मेवाड़ ने सिटी पेलेस में डॉ. श्रीकृष्ण 'जुगनू' द्वारा संपादित और अनुवादित महाराणा 'जयसिंहगुणवर्णनम्' पुस्तक का विमोचन किया। पुस्तक की रचना पं. रणछोड़ भट्ट ने महाराणा जयसिंहजी के कृतित्व और व्यक्तित्व को केन्द्र में रखकर जयसमंद के निर्माणकाल के दौरान की थी। लगभग 300 वर्षों से अनुपलब्ध इस ग्रंथ को डॉ. 'जुगनू' ने लंदन से मंगवाकर तैयार किया।

लक्ष्यराजसिंह मेवाड़ ने कहा कि नित्य नए स्त्रोतों के सामने आने से इतिहास के अंधकार में उजाला होता रहता है। शोध करने वालों का मार्ग प्रशस्त होता रहता है। देशभर में मेवाड़ इस अर्थ में गौरवान्वित है कि सबसे ज्यादा शिलालेख, सर्वाधिक संख्या में ताम्रपत्र और साहित्यिक स्त्रोत यहाँ से मिले हैं। उन्होंने कहा कि मेवाड़ के राजवंश का 1400 वर्षों का इतिहास शिलालेखों से प्रामाणित है और यहाँ सूर्य और चंद्रवंश सभी का लेखन हुआ है। इसी भूमि को एकलिंग माहात्म्य, पृथ्वीराज रासो, राणा रासो, रायमल रासो आदि सहित नगर वर्णन की गजलों, सईकी, वृक्षायुर्वेद, हस्त्यायुर्वेद जैसी कृतियों के संपादन का श्रेय है।

मेवाड़ के जलदाता रहे महाराणाओं में 59वें श्रीएकलिंग दीवान महाराणा जयसिंह का अकाल एवं सूखे से निपटने के लिए वर्षा जल के संचय, प्रबंधन एवं संरक्षण में अद्वितीय योगदान रहा। महाराणा ने उदयपुर से 32 मील दक्षिण-पूर्व में मानव निर्मित मीठे जल की विश्व विख्यात जयसमुद्र नामक झील का निर्माण करवाया। महाराणा ने वि.सं. 1748, ज्येष्ठ सुदी पंचमी को इस सुन्दर झील की प्रतिष्ठा करवाई और अपने पिता महाराणा राजसिंह (प्रथम) की परम्परा का निर्वहन करते हुए स्वर्ण का तुलादान करवाया।

इस अवसर पर डॉ. श्रीकृष्ण 'जुगनू' ने कहा कि मेवाड़ के महाराणा जयसिंह और अमरसिंह (द्वितीय) के बारे में नवीनतम पुस्तक हम सबके लिए शोध का मार्ग प्रशस्त करेगी।

वैद्य गोपालचन्द्र द्वारा असाध्य रोगों से मुक्ति

- आत्मदीप -

भोपाल के वैद्य गोपालचन्द्र गुप्ता पिछले 40 वर्षों से रोगियों को निशुल्क परामर्श दे रहे हैं। कोरोना महामारी के दौरान उन्होंने आयुर्वेदिक एवं घरेलू आसान नुस्खे बताकर मध्यप्रदेश एवं राजस्थान के हजारों नागरिकों को कारोना वायरस की चपेट में आने से बचाया। ऐसे अतुल्य सेवाकार्य के लिये उन्हें केन्द्र व राज्य सरकार सहित कई प्रमुख संस्थाओं ने राज्यस्तरीय सम्मान से विभूषित किया।

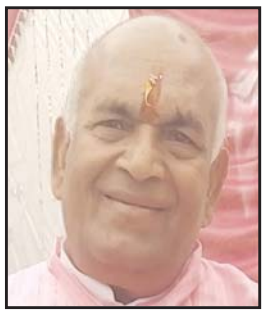

वैद्यराज गुप्ता किसी रोगी को गंभीर व्याधि होने पर कई जगह भटकने के बाद भी सही इलाज नहीं मिलने पर उसे आयुर्वेदिक, प्राकृतिक, एक्यूप्रेशर, फिजियोथेरेपी एवं घरेलू औषधियों के मिश्रित उपचार से चमत्कारिक लाभ पहुंचाकर चकित कर देते हैं। वे मानव शरीर की बाहरी एवं आंतरिक संरचना को समझते हुये विभिन्न अंगों पर होने वाली बीमारियों एवं उनके लिये कारगर औषधियों का वैज्ञानिक ढंग से अध्ययन करते हैं। बेजोड़ घरेलू नुस्खे, सरल उपाय, व्यायाम, परहेज आदि बताकर वे असाध्य बीमारियों का जड़ से खत्म होने तक निशुल्क इलाज व परामर्श देते हैं।

रोगी को पीठ, हाथ, पैर, घुटने, कंधे, कमर, रीढ़, हड्डी, मांसपेशियों आदि में वर्षों पुराने असहनीय दर्द या सूजन होने पर, स्लिप डिस्क, साइटिका, सर्वाइकल, स्पोंडिलाइटिस, आर्थराइटिस, आस्टियो पोरोसिस, टेनिस एल्बो, रीढ़ के छल्लों में दर्द, अकड़न व जकड़न आदि में उनके सस्ते वैज्ञानित उपचार से त्वरित लाभ देख रोगी हतप्रभ रह जाते हैं। वात-पित्त, कफ जनित रोगों के इलाज में उन्हें विशेषज्ञता हासिल है। श्वसन रोग, साइनस, डायबिटीज, हृदय रोग, रक्तचाप, महिनों से नाक बंद, माइग्रेन, इन्फर्टेलिटी, नशा प्रवत्ति आदि के रोगियों में उनका उपचार कारगर सिद्ध हुआ है। उनकी उपचार सिद्धि का मूल स्त्रोत है भारत की गुरू-शिष्य परंपरा। पन्ना जिले के बघवार गांव में महान संत कमलदास उनके गुरू रहे। वे बिना कोई पुस्तक देखे, स्वयं देशी दवायें बनाते थे। वे मरीज को देख उसका मर्ज भांप लेते थे। इससे पहले पिता गोकुलचन्द्र से भी जड़ी-बूटियों से इलाज करना सीखा।

मध्यप्रदेश, राजस्थान, दिल्ली, महाराष्ट्र, गुजरात, कर्नाटक, असम, पश्चिम बंगाल आदि राज्यों से कई असाध्य रोगी वैद्यराज गुप्ता से उपचार लेकर लाभान्वित हुये हैं। वे अपने आवास ए-191, इन्द्रविहार, एयरपोर्ट रोड़, भोपाल पर रोज प्रात: 8 से 12 बजे तक एवं सायं 4 से 8 बजे तक नि:शुल्क चिकित्सा परामर्श दे रहे हैं। असाध्य रोगी उनसे मोबाइल नंबर-9425018004 पर संपर्क कर सकते हैं।

कर्नल बया को महाराणा प्रताप सम्मान

उदयपुर (ह. सं.)। महाराणा प्रताप की 482वीं जयन्ती पर सजीव सेवा समिति द्वारा विख्यात जैन विद्यावेत्ता कर्नल दलपतसिंह बया को महाराणा प्रताप सम्मान से अलंकृत किया गया।

मुख्य वक्ता मनोहरसिंह कृष्णावत ने कहा कि प्रताप ने धर्म एवं स्वाधीनता के लिए अपना जीवन अर्पित कर दिया इसीलिए वे प्रात:स्मरणीय हैं। कोमल कोठारी ने महाराणा प्रताप के संघर्ष के साथ भामाशाह के त्याग को भी याद किया। डॉ. एल. एल. धाकड़ ने अतिथियों का स्वागत किया। समिति के संस्थापक शान्तिलाल भण्डारी ने समारोह की पृष्ठभूमि व भावी योजनाओं पर प्रकाश डाला। संरक्षक फतहलाल नागौरी ने वर्तमान में प्रताप की प्रासंगिकता को रेखांकित किया। संचालन के. पी. तलेसरा ने किया।

स्मृतियों के शिखर (144) : डॉ. महेन्द्र भानावत

पत्रकारिता की पयस्विनी में मेरी जीवनधर्मिता (2)

हर जगह चौराहों और भीड़भाड़ वाली जगहों पर पर्यटकों की चहल-पहल के साथ-साथ जानवरों की रेलमपेल अवश्य दिखाई देती है। उदयपुर में इस समस्या से कोई छुटकारा नहीं मिला। अब तो पर्यटकों की संख्या पहले से कई गुना बढ़ी है तब भी पशु जगत उतना ही अलमस्त और बेफिक्र बना हुआ है। इन रास्तों पर भ्रमण करते हुए मेरे मन में यह विचार कौंध रहा था कि मैं ऐसा समाचार भेजूं जो सामान्य होते हुए भी अलग से हटकर हो। तब मेरे मन में अचानक अमीर खुसरो द्वारा लिखित मुकरियां उभर आईं। मैंने एक समाचार इस तरह भेजा जो मुकरीमूलक था। इसका प्रकाशन 12 दिसम्बर 1992 को हुआ।

का सखि जनता ना सखि जानवर

उदयपुर (ह.सं.)। पर्यटकों की इस खुशहाल नगरी में पर्यटकों की चहल-पहल दिखाई देती हो या न हो पर हर जगह आवारा जानवरों की रेलमपेल अवश्य दिखाई देगी। शहर के देहलीगेट, सब्जीमंडी, धानमंडी, मुखर्जीचौक, कुम्हारवाड़ा, भड़भुजा घाटी, गांछीवाड़ा, जगदीशचौक, अमल का कांटा, सूरजपोल कहीं भी चले जाइये, आवारा पशु अवश्य मिल जाएंगे। उनके उत्पातों का सामना भी करना पड़ जाएगा। पर्यटकों के जाने-आने के भी ये ही रास्ते हैं।

इन पशुओं में अपनी-अपनी गलियों-मोहल्लों के स्वामी कुत्ते तो बेशुमार हैं ही पर ग्राम शूकर भी बेधड़क टहलते मिल जाएंगे साथ ही गाय, बैल, बछड़े, गधे तो ऐसे मिलेंगे जैसे उन्हीं की सब भूमि है।

ये पशु शहर के चौराहों पर भी बेहिचक खड़े-बैठे सुस्ताते मौज मारते मिलेंगे। तेज आते, गर्जन करते भारी वाहनों से भी इन्हें कोई सरोकार नहीं है। इन जानवरों को किसी तरह का कोई भय, खतरा किंवा मलाल नहीं है। यदि खतरा है भी तो उधर से जाने वालों को है जिनके सामान यदि पूरे बदोबस्त में नहीं हैं तो इनका मुंह चल सकता है। ये पशु सुबह से शाम तक निर्विघ्न घूमते रहते हैं।

ट्रेफिक कार्यालय तथा पुलिस चौकी के आसपास जहां सामान्यत: राहगीर नहीं ठहर पाता, वहां ये पशु अपना डेरा आराम से डाले रहते हैं। दिनभर इधर-उधर मुंह डालने पर इनकी गोचरी आराम से हो जाती है।

ऐसी पोलमपोल में दूध देने वाली गायों को भी उनके मालिक छोड़ देते हैं। सुबह-शाम उन्हें दूध प्राप्त हो जाता है, शेष समय अपना दाना-पानी ये पशु स्वयं तलाशते हैं। नगर परिषद के जिम्मे क्या है, केवल पांच रुपया प्रति पशु जो आज की महंगाई को देखते हुए कुछ नहीं है।

पशुपालकों को यदि कभी पांच रुपया देना भी पड़ जाए तो यह राशि उनके लिए भारी नहीं है। आवारा मवेशियों के कारण आए दिन छोटी-मोटी दुर्घटना घटती रहती है पर किसी को कुछ भी नहीं पड़ी है। शहर में वैसे भी सफाई के नाम पर अधिक कुछ नहीं होता और ऊपर से इन आवारा पशुओं द्वारा जो गंदगी फैलाई जाती है वह और इस शहर की रौनक को मटियामेट करने में ही सहायक होती है। ऐसे में महिलाएं कभी-कभी जब अपनी सब्जी और फल इन पशुओं के हवाले होती देखती हैं तो वे खुसरो की तरह मुकरियां छोड़ती हंसती नजर आती हैं।

धीरे से भग लग कर आयो, आकर अपनो मुंह फैलायो।
लूटहि लीनी सड़क बीच दारी, मैं क्या करती सचमुच हारी।
वारी जाऊं आवारी जाऊं, का सखि जनता ना सखि जानवर!

एकबार उपराष्ट्रपति डॉ. शंकरदयाल शर्मा की बड़ी साली उदयपुर आई। तब कुछ पत्रकारों ने उनसे भेंट की। मैंने उनसे डॉ. शर्मा के संबंध में जो सवाल पूछे वे 10 जुलाई 1992 को बॉक्स में छपे।

रसमलाई के शौकीन हैं डॉ. शंकरदयाल

उदयपुर (ह.सं.)। उपराष्ट्रपति डॉ. शंकरदयाल शर्मा मिठाई खाने के जितने शौकीन हैं उतना ही शौक उन्हें अन्यों को खिलाने में है। मिठाई में उन्हें रसमलाई सर्वाधिक प्रिय है। यह बात उनकी बड़ी साली श्रीमती चंद्रकान्ता गौड़ ने एक भेंटवार्ता के दौरान कही।

श्रीमती गौड़ ने बताया कि अंकुरित चना-मूंग को डॉ. शर्मा स्वास्थ्य के लिए बड़ा उपयोगी मानते हैं। उन्हें दही भी पसंद है। उनका स्वभाव हर स्थिति में सुखपूर्वक जीवनयापन का है। लखनऊ में रह रही श्रीमती गौड़ ने अपने उदयपुर प्रवास के दौरान भेंट में बताया कि डॉ. शर्मा अपने यथानाम शंकर के बड़े उपासक हैं और सभी शास्त्रों, धर्म ग्रंथों का गहरा अध्ययन लिए हैं।

डॉ. शंकर दयाल शर्मा यदि राजनीति में नहीं होते तो क्या होते, पूछने पर श्रीमती गौड़ ने बताया कि वे देश के बहुत बड़े शिक्षाशास्त्री होते। शिक्षा की बात जहां भी होती है वे बड़ी दिलचस्पी लेते हैं।

आदिवासी जनजीवन में कई प्रकार की अजूबी प्रथाएं देखने को मिलती हैं। प्रसिद्धि है कि किसी अनिष्ट के निवारण के लिए वे पूरा का पूरा पहाड़ जला देते हैं। गरासियों के अध्ययन के लिए जब मैंने सिरोही-आबू क्षेत्र की यात्रा की तो पहाड़ जलाने की प्रथा ने बरबस ही मेरा ध्यान आकृष्ट किया। मैंने वहां से लौटकर समाचार भेजा जो 19 नवम्बर 1987 को छपा।

वे अनिष्ट निवारण के लिए पहाड़ जलाते हैं

उदयपुर (ह.सं.)। आदिवासियों में कई प्रकार की अजीब प्रथाएं हैं जो आज भी यथावत चली आ रही हैं। इनमें एक प्रथा मगरे मगरी पहाड़ एवं जंगल जलाने की है। घर में किसी भी समस्या को टालने, भूत-प्रेत आदि से छुटकारा पाने, असाध्य रोग से मुक्त होने जैसी परिस्थितियों में आदिवासी लोग पहाड़ जलाने को मजबूर होते देखे गए हैं। यह आग ऐसी चलती रहती है कि इसे कोई बुझाने का प्रयत्न नहीं करता।

ऐसी मान्यता है कि जो इसे बुझाने आगे आएगा, उसी का अनिष्ट हो जाएगा। इससे कई बार भारी नुकसान होता देखा गया है। जंगल की मूल्यवान संपदा आग की भेंट होती देखी गई है। पुत्र प्राप्ति के लिए भी आग लगाने की रस्म की जाती है। इधर के कुंभलगढ़, कोटड़ी, भोमट, पानरवा के जंगलों में ऐसी आग कई बार देखी जाती रही है। कभी-कभी तो यह आग पचास-पचास किलोमीटर तक फैल जाती है।

गरासिया जाति के लोग इस आग को पहाड़ स्नान करना कहते हैं। उनमें ऐसा विश्वास है कि यदि कोई व्यक्ति किसी असाध्य बीमारी से भयंकर रूप से ग्रस्त है और मरना चाहते हुए भी नहीं मर पा रहा होता है तब उसके परिवार वाले उसकी मनौती करते हैं कि यदि रोगी का ठीक ढंग से निधन हो गया तो वे पहाड़ स्नान कराएंगे। ऐसी स्थिति में वे पास का कोई पहाड़ जला देते हैं। रात्रि को जलते हुए ये पहाड़ ऐसे लगते हैं जैसे दीवाली पर जगह-जगह दीप जला रखे हों या कि कोई ज्वालामुखी फटा हो।

यही नहीं, आदिवासी गरासियों पर बाद में मैंने एक पुस्तक भी लिखी जो 'कुंवारे देश के आदिवासी' नाम से प्रकाशित हुई। शादियों के मौसम में मुख्यत: गांवों और कस्बों में जहां शादी के अनूठे रंग मिलते हैं वहां कुछ ऐसी घटनाएं भी घटित होती हैं जो बड़ा मजा देती हैं और कइयों के लिए मसखरीमूलक उदाहरण बन जाती हैं। उन दिनों ऐसी ही दो खबरें मुझे किसी ने सुनाई। मैंने उन खबरों में बड़ी रोचकता पाई और उन्हें छपने को भेज दी। ये खबरें मैंने 4 मई 1979 के अंक में छपी पाईं।

शादी की जल्दी में

उदयपुर (ह.सं.)। धरियावद में उस समय बड़ी भगदड़ मच गई जब वहां के सेठ केसरीमल के दो पुत्र दूल्हों को घोड़ों ने नीचे गिरा दिया। घटना इस प्रकार बताई जाती है कि दोनों दूल्हे घोड़े पर सवार हुए ही थे कि अचानक घोड़े चमक गए जिससे दोनों दूल्हों को नीचे गिरा दिया। दोनों दूल्हों में से एक को कुछ अधिक चोट आई।

इसी प्रकार उधर के ही एक दूल्हराज अपना ध्यान शादी करने में ही अधिक होने के कारण जल्दी-जल्दी में यह भी नहीं देख पाए कि घोड़े का मुंह किधर है और पूंछ किधर और वे अपना मुंह पूंछ की तरफ कर उल्टे बैठ गए। जब साथ के मित्र-घरातियों ने उन्हें उनकी नासमझी का ध्यान दिलाया तो उन्होंने अपनी गलती सुधारी।

ऐसे ही एकबार मुझे अपने मित्र ने उदयपुर रेल्वे स्टेशन पर चेतक एक्सप्रेस से जाते हुए एक विदेशी को देखा। उसने बताया कि उसके हाथ, पांव, छाती और पीठ पर तरह-तरह के गुदने गुदाए हुए हैं। मेरे लिए यह अच्छी सूचना थी। मैं सिनेमा नहीं देखता इसलिए मुझे फिल्मी सितारों के नाम भी याद नहीं थे। तब मैंने अपने कई दोस्तों से फिल्मों के नायक-नायिकाओं के नाम पूछे और 'अंग-अंग में फिल्मी रंग' समाचार भेजा जो डबल कॉलम, बॉक्स में छपा।

यही नहीं, कांकरोली के मेरे मित्र कमर मेवाड़ी के संबोधन नामक साहित्यिक पत्र के प्रकाशन का मैं भी साक्षी रहा। उदयपुर में मेरे ऑफिस चेटक सर्कल के सामने एक बैल वाला भीड़ से घिरा हुआ था जो नाना भविष्यवाणी कर रहा था।

तब हम भी उस भीड़ में खड़े हो गए। अन्य लोगों की तरह जब कमर ने भी पूछा कि वे भी अपने मन में धारी किसी जिज्ञासा का समाधान चाहते हैं तो बैल से पूछ सकते हैं। तब उन्होंने संबोधन नाम से पत्र प्रकाशन का मन-ही-मन सवाल धारा। बैल ने अपने मालिक के कहने पर कि यहां जो साहब खड़े हैं उनके मन में जो सवाल है वह पूरा होगा कि नहीं?

चारों ओर घूमकर अंत में कमर मेवाड़ी के पास आकर उस बैल ने तीन बार स्वीकृतिसूचक गर्दन ऊपर-नीचे की। बैल मालिक बोला- 'आपने मन में जो सवाल धारा वह अवश्य पूरा होगा।' मैंने यही समाचार 'बैल की भविष्यवाणी से संबोधन का प्रकाशन' शीर्षक से हिन्दुस्तान में भेजा जो बोल्ड अक्षरों में दो कॉलम बॉक्स में छपा।

कहने का तात्पर्य यह है कि मैंने अपने समाचार भेजते समय सदैव यह ध्यान रखा कि जो समाचार मैं भेज रहा हूं वह अन्य समाचारों से न केवल हटकर हो अपितु पाठक उस समाचार को रुचिपूर्वक पढ़े। उससे उसका मन बहले और लम्बे समय तक वह समाचार उसकी याददाश्ती में बना रहे। आज भी जब मैं कहीं जाता हूं तो लोग उस काल के मेरे द्वारा भेजे समाचार की याद दिलाकर उस समाचार के साथ-साथ मुझे भी बड़ी आत्मीयता के साथ अपने मन में बसाया मिलते हैं।

उदयपुर से जब 'जय राजस्थान' प्रारंभ हुआ तो उसके संपादक चंद्रेशजी व्यास ने मुझे बुलाकर कहा कि मैं उसमें एक साप्ताहिक कॉलम शुरू करूं। यह मेरे लिए उदयपुर संभाग के इस प्रथम दैनिक की ओर से महत्वपूर्ण ऑफर थी जिसका निर्वाह मैंने सन् 1974 से लेकर सन् 2000 तक प्रति रविवार को 'चलते-चलते' नामक स्तंभ लिखकर किया।

इसी प्रकार 'जनसत्ता' के मुम्बई संस्करण में 'मेवाड़ की चिट्ठी' नाम से मेवाड़ी में कॉलम लिखने का संपादक प्रभाष जोशी से मुझे अवसर मिला। लगभग 250 घटना प्रसंग इस चिट्ठी के माध्यम से मैंने लिख भेजे जिसमें मेवाड़ के प्रमुख वीर-वीरांगनाओं, स्थापत्य से जुड़े किलों, विशिष्ट विभूतियों तथा पराशक्तियों पर ऐसी सामग्री दी जो अज्ञात और अजूबी तथा रहस्य-रोमांच से भरी हुई थी।

मेरे पास उधर की कई चिट्ठियां भी आती रहीं कि वहां के लोग इस लेखन को बेहद रुचिपूर्वक पढ़ रहे हैं और मैं लिखता रहूं लेकिन ऐसे कॉलम रोचक और अच्छे होते हुए भी बहुत लम्बे समय तक नहीं चलते हैं। जब यह कॉलम बंद कर दिया गया तो उधर जनसत्ता में छपी एक चिट्ठी का मैं यहां उल्लेख करना चाहूंगा जो 23 मार्च 1992 को प्रकाशित हुई।

मेवाड़ी चिट्ठी छपणी सावे है

जनसत्ता मात्र प्रादेशिक भाषाओं री गणी चिट्ठियां छापे है पण अण दो मीना माय एक पण मेवाड़ी चिट्ठी नी छपी है जण वास्ते अण भाषा माय भणवा रो गणो मन वे है। मेवाड़ी जाणवा वाला जनसत्ता रा गणा पाठक गणी (बेसबरी) बेसब्री सु इंतजार करे है अण तरफ ध्यान देणो सावे है।

-जेठमल कोठारी अमित
कपड़ा बाजार, कुर्ला बंबई-70

ऐसे ही मैंने जोधपुर के 'जलते दीप' में 'ओलखाण' नाम से, 'चौथा संसार' इंदौर में 'भाषा भगिनी राजस्थानी' नाम से, 'सुमन लिपि' मुम्बई में 'लोकसंस्कृति' नाम से, उदयपुर से प्रकाशित 'मनु टाइम्स' में 'इसी बहाने' नाम से और 'प्रतिदिन' में 'कभीकभार' नाम से कॉलम लिखे। यह समय सन् 1980 से 1990 के बीच का रहा।

- शेष पृष्ठ सात पर

शब्द रंजन

उदयपुर, बुधवार 15 जून 2022

सम्पादकीय

नाप तोल का लोक

किसी वस्तु, मुख्यत: खाने-पीने में उपयोग की चीजें खरीदने के लिए निश्चित तोल के हिसाब से ही उसका भावताव, मूल्य अथवा कीमत आंकी जाती है। तोलने के लिए तराजू अथवा ताकड़ी होती है जिसके एक पलड़े में खरीदी जाने वाली वस्तु तथा दूसरी में उसका वजन नापने के बाट होते हैं। ये बाट सरकार की ओर से निश्चित किये विशेष नापजोख, साइज और छाप लिये होते हैं।

आजादी के पूर्व भिन्न तरह के लोह निर्मित बाट होते। मेवाड़ में यह नाप पाव, आधा पाव, सेर, दो सेर, ढाई सेर, पांच सेर के वजन के होते। इनके नाम भी आंचलिकता लिए होते। सेर को कीला कहते। ढाई सेर वाले बाट को अड़ीरी तथा पांच सेरी बाट को पंसेरी कहते। दस सेर को धड़ी।

उससे भी पूर्व जब बाट तोल नहीं थे तो अन्दाज से वस्तु के बदले वस्तु का लेनदेन होता था। यह सिलसिला आजादी के बाद तक गांवों में रहा और छोटे-छोटे गांवों में तो आज भी हो तो कोई आश्चर्य नहीं। वहां जो मौसमी फसल यानी पैदावार होती उसके बदले उपयोग की आवश्यक चीजें खरीदी जातीं। ऐसे ही नाप का प्रचलन था।

नाप में हाथ के पंजे की पांचों अंगुलियों को फैलाकर नाप चलता। मुट्ठी से लेकर कुहनी तक का नाप चलता। चार अंगुलियों के संयुक्त मिलाप का नाप चलता। पूरे चेहरे का, नीचे ठुड्डी से लेकर सिर तक का नाप चलता। यह विषय अपने आप में बड़ा ही दिलचस्प है। चिरमी से सोना तो अभी भी तोला ही जा रहा है।

वर्तमान में गांवों में ही नहीं, शहरों में भी तोल की जगह पत्थर काम में लिया जाता है जबकि सरकार की ओर से यह आपराधिक दण्ड है पर खासतौर से सब्जी वाले और आसपास के गांवों से जो किसान अपनी उपज की सब्जी आदि लाते हैं वे बिना तोल के पत्थर, ईंट के बाट रखते हैं। खरीदने वाले भी पूर्ण विश्वासी होते हैं।

लेकिन कई बार पैदल और साइकिल पर सब्जी बेचने वालों के पास न ताकड़ी होती है न बाट। वे अपने रोजमर्रा के अन्दाज से सब्जी बेचते हैं। पूछने पर एक सब्जी वाले ने बताया कि खरीदने वाला हमारे पर पूरा भरोसा करता है फिर हम कौन होते हैं जो उसके साथ विश्वासघात या दगा करें। कोई नहीं देख रहा है पर ऊपर वाला तो देख ही रहा है।

पाठकों की चुनीन्दा प्रतिक्रियाएं -

शब्द रंजन पढ़कर अनेक पाठक मोबाईल अथवा ई-मेल या अन्य साधनों से अपनी प्रतिक्रियाएं भेजते हैं। उनमें प्रशंसापरक ही अधिक होती हैं। हम तटस्थ और वास्तविकता वाली तथा सुझावात्मक प्रतिक्रियाओं का स्वागत करेंगे। आप चाहें तो नि:संकोच अपनी तटस्थ सम्मति भेज सकते हैं। कृपया अपना पूरा नाम, स्थान और मोबाईल नं. अवश्य लिखें। - **सम्पादक**

हालावाद से हिन्दी साहित्य को नया मोड़ : शर्मा

उदयपुर (ह. सं.)। प्रबुद्ध साहित्यकार डॉ. के. के. शर्मा ने डॉ. जयप्रकाश भाटी 'नीरव' लिखित 'बच्चन का काव्य: अभिव्यंजना और शिल्प' का विमोचन किया। उन्होंने कहा कि बच्चनजी ने हालावाद का प्रवर्तन कर हिन्दी साहित्य को नया मोड़ दिया जिसमें प्रेम और सौन्दर्य का अनूठा संगम है।

डॉ. मलय पानेरी ने कहा कि बच्चनजी ने अपनी निजी अनुभूतियों को लेकर भी समाज के सुख-दु:ख का कविताओं में सजीव चित्रण किया है। डॉ. नवीन नंदवाना ने बच्चनजी लिखित गीत 'दिन जल्दी ढलता है' का पाठ करते हुए कहा कि कवि सांसारिक कठिनाइयों से जूझ रहा है, फिर भी जीवन से उसका गहरा लगाव है। डॉ. गिरीशनाथ माथुर ने कहा कि बच्चन कवि से पहले कहानीकार भी थे। अध्यक्ष पद से डॉ. लक्ष्मीनारायण नन्दवाना ने कहा कि बच्चन पर कलम चलाना गहरी समझ का कार्य है। कार्यक्रम में डॉ. लक्ष्मीलाल वर्मा, विष्णु शर्मा 'हितैषी' डॉ. अंजना गुर्जर गौड़, प्रेमलता शर्मा, दुर्गाशंकर गर्ग, हरीश आर्य की उल्लेखनीय उपस्थिति रही।

राजनीति सेवा नहीं और नेता लोग पाबंदियों के बिना बेपरवाह

- डॉ. वेदप्रताप वैदिक -

राज्यसभा के चुनावों में राज्यों के विधायक ही मतदाता होते हैं। आम चुनावों में मतदाताओं को अपनी तरफ फिसलाने के लिए सभी दल तरह-तरह की फिसलपट्टियां लगाते हैं लेकिन विधायकों के साथ उल्टा होता है। उनका अपना राजनीतिक दल उनको फिसलने से रोकने के लिए एक-से-एक अजीब तरीके अपनाता है। इस समय कांग्रेस, शिवसेना, भाजपा और पंवार-कांग्रेस ने अपने-अपने विधायकों का अपहरण कर लिया है और उन्हें दुल्हनों की तरह छिपाकर रख दिया है।

सभी पार्टियां अपने विधायकों से डरी रहती हैं। उन्हें डर लगा रहता है कि अगर उनके थोड़े-से विधायक भी विपक्ष के उम्मीदवार की तरफ खिसक गए तो उनका उम्मीदवार हार जाएगा। कई उम्मीदवार तो सिर्फ दो-चार वोटों के अंतर से ही हारते और जीतते हैं। विधायकों को फिसलाने के लिए नोटों के बंडल, मंत्रिपद का लालच, प्रतिद्वंदी पार्टी में ऊंचा पद आदि की चूसनियां लटका दी जाती हैं। यदि राज्यसभा की सदस्यता का यह मतदान पूरी तरह दल-बदल विरोधी कानून के अंतर्गत हो जाए तो ऐसे सांसदों के होश-हवास गुम कर देगा। पराए दल के उम्मीदवार को वोट देनेवाले सांसद की सदस्यता तो छिनेगी ही, उसकी बदनामी भी होगी।

ऐसा कोई प्रावधान अभी तक नहीं बना है, इसीलिए सभी दल अपने विधायकों को अपने राज्यों के बाहर किसी होटल या रिसोर्ट में एकांतवास करवाते हैं। उन विधायकों के चारों तरफ कड़ी सुरक्षा रहती है। उनका इधर-उधर आना-जाना और बाहरी लोगों से मिलना-जुलना मना होता है।

इस समय कांग्रेस, शिवसेना, भाजपा और पंवार-कांग्रेस ने अपने-अपने विधायकों का अपहरण कर लिया है और उन्हें दुल्हनों की तरह छिपाकर रख दिया है। विधायकों को फिसलाने के लिए नोटों के बंडल, मंत्रिपद का लालच, प्रतिद्वंदी पार्टी में ऊंचा पद आदि की चूसनियां लटका दी जाती हैं। यदि राज्यसभा की सदस्यता का यह मतदान पूरी तरह दल-बदल विरोधी कानून के अंतर्गत हो जाए तो ऐसे सांसदों के होश-हवास गुम कर देगा। कोई इन पार्टियों से पूछे कि जितने दिन ये विधायक आपकी कैद में रहते हैं, ये विधायक होने के कौनसे कर्तव्य का निर्वाह करते हैं? वर्तमान राजनीति में न किसी सिद्धांत का महत्त्व है, न नीति का, न विचारधारा का! राजनीति में झूठ-सच, निंदा-स्तुति, अपार आमदनी-बेहिसाब खर्च, चापलूसी और कटु निंदा यह सब इस प्रकार चलता है, जैसे कि वह कोई वेश्या हो।

उनके मोबाइल फोन भी रखवा लिये जाते हैं। उनके खाने-पीने, खेलने-कूदने और मौज-मजे का पूरा इंतजाम रहता है। उन पर लाखों रु. रोज़ खर्च होता है। कोई इन पार्टियों से पूछे कि जितने दिन ये विधायक आपकी कैद में रहते हैं, ये विधायक होने के कौनसे कर्तव्य का निर्वाह करते हैं? इससे भी बड़ा सवाल यह है कि लगभग सभी पार्टियां, आजकल यही 'सावधानी' क्यों बरतती हैं? इसका मूल अभिप्राय क्या है?

इसका एक ही अभिप्राय है। वह यह कि आज की राजनीति सेवा के लिए नहीं है। वह मेवा के लिए है। जिधर मेवा मिले, हमारे नेता उधर ही फिसलने को तैयार बैठे रहते हैं। वर्तमान राजनीति में न किसी सिद्धांत का महत्व है, न नीति का, न विचारधारा का! राजनीति में झूठ-सच, निंदा-स्तुति, अपार आमदनी-बेहिसाब खर्च, चापलूसी और कटु निंदा यह सब इस प्रकार चलता है, जैसे कि वह कोई वेश्या हो।

लगभग डेढ़ हजार साल पहले राजा भतृहरि ने 'नीतिशतक' में यह जो श्लोक लिखा था, वह आज भी सच मालूम पड़ता है। राजनीति में सक्रिय कई लोग आज भी इसके अपवाद हैं लेकिन ज़रा मालूम कीजिए कि क्या वे कभी शीर्ष तक पहुंच सके हैं? जो लोग अपनी तिकड़मों में सफल हो जाते हैं, वे दावा करते हैं कि सेवा ही उनका धर्म है। इससे क्या फर्क पड़ता है कि हम बैठकर नहाते हैं या खड़े होकर नहाते हैं? भाजपा में रहें या कांग्रेस में जाएं, एक ही बात है। हमें तो जनता की सेवा करनी है। ऐसे लोग मेवा को चबाए बिना ही निगल लेते हैं।

संसद की संयुक्त समिति ने एक आदेश जारी किया है, जिसके कारण अब सांसदों को सिर्फ अपनी एक ही पेंशन पर गुजारा करना होगा। अभी तक एक सांसद को, यदि वह विधायक भी रहा हो और सरकारी कर्मचारी भी रहा हो तो तीन-तीन पेंशनें लेने की सुविधा बनी हुई है। हमारे सांसदों को तीन लाख 30 हजार रुपये तो हर महिने वेतन के तौर पर मिलते ही हैं, उन्हें तरह-तरह की इतनी सुविधाएं भी मिलती हैं। उन सबका हिसाब बाजार भाव से जोड़ा जाए तो उन पर होनेवाला सरकारी खर्च कम से कम 10 लाख रुपये प्रति माह होता है जबकि भारत के लगभग 100 करोड़ लोग 10 हजार रुपये प्रति माह से भी कम में गुजारा करते हैं।

हमारे वे सांसद और विधायक बिल्कुल भौंदू माने जाएंगे, जो सिर्फ अपने वेतन और भत्तों पर ही निर्भर होंगे।

हमारे सांसदों को तीन लाख 30 हजार रुपये तो हर महिने वेतन के तौर पर मिलते ही हैं, उन्हें तरह-तरह की इतनी सुविधाएं भी मिलती हैं। उन सबका हिसाब बाजार भाव से जोड़ा जाए तो उन पर होनेवाला सरकारी खर्च कम से कम 10 लाख रुपये प्रति माह होता है जबकि भारत के लगभग 100 करोड़ लोग 10 हजार रुपये प्रति माह से भी कम में गुजारा करते हैं। पंजाब में अकाली दल के 11 बार विधायक रहे प्रकाशसिंह बादल को लगभग 6 लाख रुपये प्रति माह पेंशन मिलती है।

राजनीति में आनेवाला हर व्यक्ति, चाहे वह किसी भी पार्टी का हो, उसके लिए यह सरकारी वेतन और भत्ते तो ऊँट के मुंह में जीरे के समान हैं। हमारी राजनीति का शुद्धिकरण तभी हो सकता है जबकि हमारे जन-प्रतिनिधि आचार्य कौटिल्य की सादगी का अनुकरण करें या यूनानी विद्वान प्लेटो के दार्शनिक सेवकों की तरह रहें।

प्रधानमंत्री ने खुद को 'प्रधान जनसेवक' कहा है, जो बिल्कुल उचित है लेकिन हमारे नेतागण वास्तव में जनता के प्रधान मालिक बन बैठते हैं। उनकी लूटपाट और उनकी अकड़ हमारे नौकरशाहों के लिए अत्यंत प्रेरणादायक होती है। वे उनसे भी ज्यादा अकड़बाज और लुटेरे बनकर ठाठ करते हैं। संसदीय समिति को बधाई कि उसने अभी सांसदों की दुगुनी-तिगुनी पेंशन पर रोक लगाई है लेकिन यह काम अभी अधूरा ही है। उसे पहला काम तो यह करना चाहिए कि सांसदों को अपने वेतन और भत्ते खुद ही बढ़ाने के अधिकार को समाप्त करे।

दुनिया के कई लोकतांत्रिक देशों में यह अधिकार दूसरे संगठन को दिया गया है। इसके अलावा जरा यह भी सोचा जाए कि यदि कोई व्यक्ति पांच साल से कम समय तक संसद और विधायक रहे तो उसे पेंशन क्यों दी जाए? क्या सरकारी कर्मचारी और विश्वविद्यालयों के प्रोफेसरों को इस तरह पेंशन मिल जाती है?

मेरी अपनी राय तो यह है कि सांसदों और विधायकों को कोई पेंशन नहीं लेनी चाहिए। इसके अलावा यदि विभिन्न राज्यों का हिसाब-किताब देखें तो वहां पेंशन के नाम पर लूट मची हुई है। कई राज्यों में जो विधायक कई बार चुने जाते हैं, उनकी पुरानी पेंशन में नई पेंशन भी जुड़ जाती है। पंजाब में अकाली दल के 11 बार विधायक रहे प्रकाशसिंह बादल को लगभग 6 लाख रुपये प्रति माह पेंशन मिलती है। 'आप पार्टी' की मान सरकार इस प्रावधान पर रोक लगा रही है। इसके अलावा विधायकों के और भी कई मजे हैं।

देश के सात राज्यों में विधायक लोगों की आय पर आयकर उनकी सरकारें भरती हैं। उन्हें भी सांसदों की तरह निवास, यात्राओं आदि की कई मुफ्त सुविधाएं मिली रहती हैं। जो सुविधाएं जन-सेवा के लिए जरुरी हैं, वे अवश्य दी जाएं लेकिन नेताओं की पेंशन, मोटी तनख्वाह और अनावश्यक सुविधाओं में यदि कटौती कर दी जाए तो हजारों करोड़ रु. की बचत हो सकती है, जिसका लाभ देश के वंचितों, गरीबों और पिछड़ों को पहुंचाया जा सकता है। आजकल देश के नेतागण अपने विज्ञापन छपाने और दिखाने पर अरबों-खरबों रु. खर्च कर रहे हैं। इस पर भी तुरंत पाबंदी लगनी चाहिए।

अपना देश अपनी संस्कृति

नटनी का चबूतरा

भारतीय लोककला मण्डल के लोकानुरंजन समारोह में अपनी नटबाजी कला के प्रदर्शन के दौरान राजनट गोरधन ने बताया कि उस नटनी का नाम गलकी था। सुंदरता में बेजोड़ होने से वह सुन्दर नाम से भी चर्चित हुई। रस्से पर जैसा उसका कमाल था वैसा कोई जमीन पर भी नहीं दिखा सका। सबकी नजर बांधने की कला भी उसमें पहुंची थी। वह रस्से पर कौतुक दिखाती किन्तु देखने वालों को लगता कि कूकड़ी के कच्चे धागे पर वह जादू ढा रही है। महाराणा ने भी जब उसकी प्रशंसा सुनी तो उसका कमाल देखने की इच्छा जताई। इस पर नटनी दरबार में पेश की गई।

नटनी बोली – 'गुस्ताखी माफ हो अन्नदाता, इजाजत हो तो पानी पर खेल मुलायजा कराना चाहूंगी।' दरबार ने हां कर दी। सरदार बोले– 'यदि ऐसा कर दिखाया तो?' दरबार के श्रीमुख से निकला– 'तो आधे राज की मालकिन बनादी जाएगी।' तिथि तय की गई। सब ओर बात फैल गई। गांव-के-गांव देखने उलट पड़े। पीछोला के किनारे राजमहल से लेकर सीसारमा के बैजनाथ महादेव मंदिर की घूमटी तक पानी पर धागा बांधा गया। अपने पूरे श्रृगांर में बनीठनी नटनी हाथ में तलवार और सिर पर मटका लिए मंदिर से कौतुक दिखाती चली। सरदारों में खुसरफुसर हुई। नटनी राज करेगी तो सरदार क्या पानी भरेंगे? नाक हमारा कटेगा। लोग कहेंगे कि क्या सबमें नामर्दी आ गई है। उधर नटनी का कमाल पानी के हिलोरों की तरह सबके दिल दहलाए जा रहा था। सरदारों के मन में षड्यंत्र घूमगया। गलकी का घरवाला था जलालिया।

जलालिया पक्का मंत्रबाज था। बड़े लोगों के खतरों से परिचित हो उसने धागे को मंत्र-बल से काट दिया ताकि किसी की तलवार-कटार का कोई असर न हो पाए। सरदारों ने हिम्मत नहीं हारी। एक सरदार मंत्र विद्या का जानकार था। उसने तत्काल मोचीवाली तेज धार की रांपी मंगवाई और देखते-देखते धागा काट दिया। सब ओर हड़कंप मच गया। जितने मुंह उतनी बातें होने लगीं। नटनी औंधे मुंह गिरी। वह आधा धागा पार कर चुकी थी।

महाराणा को बड़ा अफसोस हुआ। उन्होंने नटनी की स्मृति में जहां वह गिर मरी वहां बारह फीट ऊंचा, बीस फीट समचौरस चबूतरा बनवाया जो नटनी का चबूतरा नाम से जाना गया। यह चबूतरा आज अच्छी हालत में नहीं है। ऊपर चढ़ने की सीढ़ियां टूट गई हैं। पानी से दूर होने पर मनचले वहां जाकर मस्ती छानते हैं। लेखक ने इस चबूतरे पर करीब एक घण्टा व्यतीत कर नटनी की यादों में उमड़ती घुमड़ती लहरों का जायका लिया।

जलालिया भी कम नटबाज नहीं था। महलों में त्रिपोलिया के वहां खेल दिखाते हुए एकबार हाथी चंचलगर को लांघ गया। इस पर महाराणा अमरसिंह (1817-29) ने उसे बंबोरा के पास चावंड्या गांव और बारह बीघा जमीन बख्शीश दी।

– **म. भा.**

प्रविष्टियां आमंत्रित

'स्वयं प्रकाश न्यास' ने सुप्रसिद्ध साहित्यकार स्वयं प्रकाश की स्मृति में दिए जाने वाले वार्षिक सम्मान के लिए प्रविष्टियां आमंत्रित की हैं। न्यास के अध्यक्ष प्रो. मोहन श्रोत्रिय ने बताया कि राष्ट्रीय स्तर का सम्मान क्रमशः कहानी, उपन्यास और नाटक विधा की किसी ऐसी कृति को दिया जाएगा, जो सम्मान के वर्ष से अधिकतम छह वर्ष पूर्व प्रकाशित हुई हो। यह सम्मान कथेतर विधाओं की किसी कृति को दिया जाएगा। सम्मान में ग्यारह हजार रुपये, प्रशस्ति पत्र और शॉल भेंट किये जाएंगे। प्रविष्टियां डॉ. पल्लव को 15 अगस्त तक 393, डीडीए, ब्लॉक सी एंड डी, शालीमार बाग, दिल्ली-110088 पते पर भिजवाई जा सकेंगी।

– **प्रो. मोहन श्रोत्रिय**

मॉनसून सर्विस कैंप की घोषणा

उदयपुर (ह. सं.)। जगुआर लैंड रोवर इंडिया ने अपने वार्षिक मॉनसून सर्विस कैंप की घोषणा की। कंपनी के ग्राहकों के लिए ख़ास सर्विस कैंप भारत में सभी अधिकृत खुदरा विक्रेता केन्द्रों में 14 से 18 जून तक चलेगा। इस कैंप में ग्राहक वाहन की अतिरिक्त जाँच और ब्रांडेड गुड्स, ऐक्सेसरीज और मूल्य-वर्द्धित सर्विसेज पर विशेष ऑफर का लाभ उठा सकते हैं। सभी वाहनों को जगुआर और लैंड रोवर के अत्यंत प्रशिक्षित तकनीशियनों द्वारा देखा जाएगा और जरुरत होने पर जगुआर और लैंड रोवर के असली कलपुर्जे लगाए जाएंगे। कैंप में इलेक्ट्रॉनिक वाहनों की 32 बिन्दुओं पर अतिरिक्त जाँच की जाएगी।

जगुआर लैंड रोवर इंडिया के प्रेसिडेंट और मैनेजिंग डायरेक्टर, रोहित सूरी ने कहा कि हम अपने ग्राहकों को उनके वाहनों के लिए श्रेणी में सर्वोत्तम देखभाल के साथ-साथ सुरक्षित और कार्यकुशल ड्राइविंग एक्सपीरियंस मुहैया करने वाली सर्विसिंग प्रदान करने के लिए वचनबद्ध रहे हैं। हमारा मॉनसून सर्विस कैंप जगुआर और लैंड रोवर वाहन के सभी मालिकों की मौसमी ज़रूरतों का ध्यान रखने के लिए डिजाइन किया गया है। जिन ग्राहकों ने अपना शॉफर रखा हुआ है, उनके लिए सर्विस कैंप में विशेष तौर पर तैयार शॉफर ट्रेनिंग प्रोग्राम की व्यवस्था रखी गई है।

राजस्थानी संस्कृति के प्रतीक मेंहदी मांडनों की कला

– डॉ. कहानी भानावत –

राजस्थान रंगीला तथा विविध रंग-रूपों का प्रदेश है। यहां जितने रंग-रूप, आकार-प्रकार, तौर-तरीके, साज सज्जा, अलंकरण, आभूषण एवं त्योहार देखने को मिलते हैं, उतने संभवतः कहीं नहीं। नाना प्रकार के भित्ति-चित्रों, भूमि अलंकरणों एवं मेहंदी मांडनों जैसी कला कृतियों का रक्षक एवं पोषक होने के नाते ही राजस्थान को अत्यंत रंग भरा, गुलाबी एवं रईस प्रदेश की संज्ञा दी जाती है।

मेंहदी सदैव सुहाग और सौभाग्य की प्रतीक समझी जाती रही है। गणगौर, होली, दीवाली, तीज तथा श्रावणी आदि त्योहारों पर नवयुवतियां, अपने हाथों पर चूंदड़ी, चक्र, घेवर, लहरिया, चौपड़ आदि नाना प्रकार के मांडनों से अपने हाथों को सजाती हैं। आकृति के अनुसार इन मांडनों को भिन्न-भिन नामों से पुकारा जाता है। जैसे- लहरिया भांत, चौपड़ भांत, खजूर भांत तथा मोर भांत आदि। हथेली के पिछले भाग पर तथा पांव पर तरह-तरह की बेलें और फूल मांडे जाते हैं।

मोटे कपड़े से मेंहदी छानकर उसमें बतासे का पानी मिलाकर उसे हाथ से खूब घोट लिया जाता है फिर उसे चिकनी बनाने के लिए उसमें इमली तथा गोंद का पानी मिला दिया जाता है। कहीं-कहीं कत्था तथा गोंद का पानी भी मिलाया जाता है। दियासलाई की सींक या सुई की सहायता से बारीक-बारीक मांडने मांडे जाते हैं। विवाह आदि मांगलिक अवसरों पर तथा लड़की को ससुराल भेजते समय मेंहदी लगाना धार्मिक कार्य माना जाता है। गर्मियों में जब तेज गर्मी पड़ती है, पांवों के नीचे मेंहदी लगायी जाती है, जिससे अधिक ठंडक पहुंचती है।

दीवाली के दूसरे रोज गोवर्धन पूजा के दिन गाय, बैल तथा बछड़ों की पीठ पर कटोरी, हाथ तथा दीपक आदि की आकृतियों के मांडने भी मांडे जाते हैं। कहीं-कहीं मेंहदी से ही

हथलेवा जुड़ाकर वैवाहिक विधि सम्पन्न की जाती है। ऐसी धारणा है कि यदि हथलेवा अच्छा रच जाता है, तो पति-पत्नी में प्रेम बना रहता है। मेंहदी के कई गीत भी प्रचलित हैं। 'प्रेम रस मेंहदी राचणी', 'बाई म्हारी मेंहदी पाछी दे' जैसे गीत मेंहदी के महत्त्व के पूर्ण परिचायक हैं। राजस्थान में चितौड़ तथा तलावदा की मेंहदी अत्यन्त प्रसिद्ध मानी जाती है। बीकानेर, जयपुर, जोधपुर तथा उदयपुर आदि की ओर मांडनें अत्यन्त कलात्मक ढंग से मांडे जाते हैं।

राजस्थान में सर्वाधिक प्रचलित मेंहदी मांडनों में चूंदड़ी, चक्र, लहरिया, घेवर, चौपड़, पांच पचेटा तथा मुट्ठिया आदि लोकप्रिय माने जाते हैं। गणगौर, होली, दीवाली, तीज तथा श्रावणी आदि त्यौहारों पर नवयुवतियां नानाप्रकार के मांडने अपने हाथों पर मांडती हैं।

चूंदड़ी की शक्ल के छोटे-छोटे खानों में बारीक-बारीक बूंदों के रूप में ये मांडनें अत्यन्त आकर्षक लगते हैं।

पार्वती की पूजा करते समय स्त्रियां इसी प्रकार की 'मोतीचूर' नामक चूंदड़ी पहनती हैं। दीवाली पूजन आदि पर विशेष रूप से मांडे जान वाले चक्र ईश्वरीय शक्ति के द्योतक हैं। श्रावण के त्योहारों पर मांडे जाने वाले मांडनों में लहरिया प्रमुख मांडना है।

इन दिनों तरह-तरह के लहरिये ओढ़कर महिलाएं बगीचों में जाकर कौड़ियां खेलती हैं। झूला झूलती हैं। विविध प्रकार के नृत्य-गीतों द्वारा मनोरंजन करती हैं। चौपड़ एक प्रकार का खेल होता है जो लकड़ी की बनी सौलह गोटियों से खेला जाता है। गणगौर के अवसर पर यह मांडना अधिक मांडा जाता है।

मेंहदी अक्सर रात को सोते समय लगायी जाती है। प्रातः उठते ही हाथ पावों की मेंहदी हटाकर तिल अथवा सरसों का तेल लगा दिया जाता है, जिससे मेंहदी का रंग अधिक खिल उठता है। उत्कृष्ट कलाकृति के रूप में राजस्थानी रमणियों के ये मांडनें राजस्थानी संस्कृति के आदर्श हैं जिन पर उन्हें गर्व होना स्वाभाविक है। मेंहदी महिलाओं में सुहाग और

सौभाग्य की प्रतीक है। नवयुवतियों के हाथों में उसके मांडनें कोमलता और सुन्दरता में चार चांद लगा देते हैं। किसी के हाथों में मेंहदी लगना और उसका रंग चढ़ना अपनेआप में बहुत महत्त्व रखता है। विदेशों में भी मेंहदी के मांडनों की लोकप्रियता बढ़ती जा रही है। कई विदेशी महिलाएं यहां से लौटते समय अपने हाथ-पांवों पर मेंहदी रचाकर जाती हैं।

मांडनों की प्रतियोगिताएं भी होने लग गई हैं। भीलवाड़ा का संगीत कला केन्द्र प्रतिवर्ष मांडनों की प्रतियोगिता आयोजित करता है जिसमें सौ से अधिक महिलाएं भाग लेकर सौंदर्य छवि छिटकाती हैं।

वर्षों पूर्व लोककलाविद डॉ. महेन्द्र भानावत ने पहले पहल मेंहदी के महत्त्व पर 'मेंहदी रंग राची' तथा 'मेंहदी राचणी' पुस्तकें लिखीं। उसके बाद तो अनेकों ने इस विषय पर लिखा और शोध की उपाधि तक ली।

बाजार / समाचार

नेक्सस मॉल्स ने पेश की नई ब्रांड पहचान

उदयपुर (ह. सं.)। भारत के सबसे बड़े रिटेल प्लैटफॉर्म नेक्सस मॉल्स ने अपनी नई ब्रांड पहचान पेश की है। नेक्सस मॉल्स भारत का सबसे बड़ा रिटेल प्लैटफॉर्म है जिसके पास 13 शहरों में ए-ग्रेड के लगभग एक करोड़ वर्गफीट क्षेत्रफल में बने शॉपिंग सेंटर हैं। नई ब्रांड पहचान के तहत कंपनी की 17 रिटेल प्रॉपर्टीज़ को एकजुट किया गया है। भारत में संगठित रिटेल के इतिहास में यह सबसे अहम परिवर्तनों में से एक है और नेक्सस सेलिब्रेशन ग्राहकों को पहले रखने के लिए प्रतिबद्ध है।

नेक्सस मॉल्स के सीईओ दलीप सहगल ने कहा कि नई ब्रांड पहचान का उद्देश्य नेक्सस मॉल्स प्लैटफॉर्म के कर्मचारियों, रिटेलरों और ग्राहकों के बीच संबंधों को मजबूत करना और जागरुकता बढ़ाना है। कंपनी का नया लोगो आधुनिक, बोल्ड, आकर्षक होने के साथ-साथ नेक्सस मॉल्स के विजन को प्रतिबिम्बित करता है। हमारे वादे 'हर दिन कुछ नया' को नए अंदाज़ में पेश करती है। सहगल ने कहा कि हमारे साथी कारोबारियों व ग्राहकों ने हम पर जो भरोसा जताया है उसकी वजह से निरंतर रिकवरी कर पाए और अपनी वृद्धि को बरकरार रखा। इस वक्त हमने 130 प्रतिशत बिक्री रिकवर कर ली है और पोर्टफोलियो स्तर पर 100 प्रतिशत से अधिक आगंतुक हमारे मॉल्स में आ रहे हैं। कंपनी ने 2021 में प्रेस्टीज ग्रुप के 8 शॉपिंग सेंटर्स समेत अन्य प्रॉपर्टीज का अधिग्रहण किया था तो उसके बाद एक नाम नेक्सस मॉल्स के अंतर्गत इनको एकजुट करना जरूरी था। अब नेक्सस मॉल्स भारत का सबसे बड़ा व सबसे विविधिकृत रिटेल प्लैटफॉर्म बन चुका है।

'4 का 100 कैशबैक' ऑफर

उदयपुर (ह. सं.)। भारत की प्रमुख डिजिटल भुगतान और वित्तीय सेवा कंपनी, पेटीएम की मालिक वन97 कम्युनिकेशंस लि. ने 19 जून तक आयोजित हो रही पेटीएम भारत बनाम दक्षिण अफ्रीका टी20 सीरीज के दौरान यूपीआई मनी ट्रांसफर्स पर फिर से '4 का 100 कैशबैक ऑफर' लाने की घोषणा की। उल्लेखनीय है कि गत फरवरी में भारत-वेस्ट इंडीज सीरीज के दौरान पहली बार यह ऑफर पेश किया तब लाखों यूजर्स ने कैशबैक जीता था। पेटीएम यूपीआई ऑनलाइन मनी ट्रांसफर के लिए करोड़ों उपयोक्ताओं की पहली पसंद है, क्योंकि यह सुरक्षित और भरोसेमंद हैं। मैच के दिन नए यूजर '4 का 100 कैशबैक ऑफर' का लाभ उठा सकते हैं जहाँ पेटीएम यूपीआई का प्रयोग करके 4 रुपये भेजने पर उन्हें 100 रुपये का सुनिश्चित कैशबैक मिलेगा।

एन.डी. माली को 'भारत गौरव पुरस्कार'

उदयपुर (ह. सं.)। मोबाइल एक्सेसरीज की विश्वसनीय ब्रांड केडीएम के संस्थापक भीनमाल निवासी एन. डी. माली को प्रतिष्ठित 'भारत गौरव पुरस्कार' से केरल के राज्यपाल आरिफ मोहम्मद खान ने सम्मानित किया। नए भारत के निर्माण के लिए मोबाइल एसेसरीज के क्षेत्र में घरेलू उत्पादनों को बढ़ावा देने हेतु उनके द्वारा किए गए उल्लेखनीय योगदान के लिए उन्हें यह अवार्ड प्रदान किया गया। यह 'भारत गौरव पुरस्कार' अनसंग हीरोज को प्रदान किया जाता है, जिन्होंने भारत सरकार की मेक इन इंडिया थीम को सफल बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई हो। एन. डी. माली ने यह पुरस्कार नए भारत के युवा और उभरते उद्यमियों को समर्पित किया। उन्होंने कहा कि राष्ट्रीय स्तर के प्रतिष्ठित मंच पर सम्मानित किया जाना अपनेआप में एक बड़ा सम्मान है।

प्रॉम्प्ट इनोवेशन को पशुपालन स्टार्टअप ग्रैंड चौलेंज 2.0 अवार्ड

उदयपुर (ह. सं.)। अहमदाबाद स्थित 'प्रॉम्प्ट इनोवेशन' को पशुपालन स्टार्टअप ग्रैंड चौलेंज 2.0 में अवार्ड देकर सम्मानित किया गया है। प्रॉम्प्ट इनोवेशन एनर्जी एफीसिएंट और सस्टैनबल कूलिंग सोलूशन के क्षेत्र में अग्रणी स्टार्ट-अप है। पशुपालन और डेयरी विभाग द्वारा स्टार्टअप इंडिया पहल के भाग रूप आयोजित पशुपालन स्टार्टअप ग्रैंड चौलेंज 2.0 का उद्देश्य पशुपालन और डेयरी क्षेत्र में चुनौतियों का समाधान करने के लिए नई और व्यावसायिक सोलूशन की खोज करना और इन क्षेत्रों में नई तकनीक के उपयोग को बढ़ावा देना है। इस चौलेंज(चुनौती) के लिए कुल 157 आवेदन प्राप्त हुए थे। प्रॉम्प्ट इनोवेशन को इसके उत्पाद मिल्कोचिल, जो एक इंस्टेंट मिल्क चिलर है और दूध को ताजा रखने और उसकी शेल्फलाइफ को बढ़ाने में मदद करता है, के लिए अवार्ड से सम्मानित किया गया। प्रॉम्प्ट इनोवेशन के निदेशक श्रीधर मेहता ने कहा कि मिल्कोचिल एक क्रांतिकारी उत्पाद है जो दूध को ठंडा करने के तरीके को बदल देगा। दूध को तत्काल ठंडा करने से इसके खराब होने की आशंका कम हो जाती है, दूध की क्वालिटी बनी रहती है और ज्यादा शेल्फलाइफ से डेयरी किसानों को अधिक आय होती है।

दरीबा स्मेल्टिंग कॉम्प्लेक्स और जिंक स्मेल्टर देबारी को ग्रीनको गोल्ड और सिल्वर रेटिंग

उदयपुर (ह. सं.)। सीआईआई सम्मेलन के 5वें संस्करण में राजस्थान राज्य प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड के अध्यक्ष सुधांशु पंत ने हिंदुस्तान जिंक के दरीबा स्मेल्टर कॉम्प्लेक्स को गोल्ड रेटिंग एवं जिंक स्मेल्टर देबारी को सिल्वर ग्रीनको अवार्ड से सम्मानित किया। इस अवसर पर जिंक के मुख्य कार्यकारी अधिकारी अरुण मिश्रा को वक्ता के रूप में आमंत्रित किया गया।

मिश्रा ने कहा कि जिंक ने 200 मेगावाट अक्षय ऊर्जा की पहल की हैं। इसका लक्ष्य 2050 तक ऊर्जा उत्पादन के लिए कोयले की खपत को खत्म करना है। राजस्थान में देश के लिए भविष्य का ऊर्जा घर बनने की क्षमता है। राज्य सरकार को विश्व स्तर पर जस्ता खनन क्षमता को बढ़ाकर, अक्षय ऊर्जा उत्पादन को बढ़ावा देने और जस्ता बैटरी के रूप में ऊर्जा भंडारण समाधान प्रदान करने के इस का लाभ उठाना चाहिए। उन्होंने कहा कि सस्टेनेबिलिटी अब विकल्प नहीं है, पर्यावरण जागरूकता हमें अन्य से अलग पहचान दिलाती है।

पिम्स हॉस्पिटल में हर्निया का सफल ऑपरेशन

उदयपुर (ह. सं.)। पेसिफिक इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज (पिम्स) हॉस्पिटल, उमरड़ा में चिकित्सकों ने जटिल हर्निया का सफल ऑपरेशन किया है।

चेयरमेन आशीष अग्रवाल ने बताया कि सलूम्बर निवासी मेगाली बाई (54) को कई दिनों से पेट में तेज दर्द की समस्या थी। उसने कई अस्पतालों में उपचार करवाया लेकिन कोई फर्क नहीं पड़ा। किसी परिचित के कहने पर परिजन गत दिनों मेगाली बाई को पिम्स हॉस्पिटल लेकर आए। जांच करने पर मेगाली बाई के पेट में जटिल हर्निया पाया गया जो लगभग 50 वर्गसेमी. का था। इस पर मरीज का तुरन्त ऑपरेशन किया गया जिसमें कम्पोनेंट सेपरेशन तकनीक द्वारा पेट की दीवार का पुनर्निर्माण करते हुए इसमें एक बड़ी व एक छोटी दो मेस लगाई गई। ऑपरेशन सर्जरी विभाग के सर्जन डॉ. पार्थ सारथी होटा व टीम द्वारा किया गया। मरीज अभी पूर्ण रूप से स्वस्थ है।

दिव्यांग नरेन्द्र को मोटराइज्ड व्हीलचेयर भेंट

उदयपुर (ह. सं.)। मध्यप्रदेश के अनूपपुर जिला के जमुड़ी कस्बे के नरेन्द्र रौतेल के ट्रेन के पहियों द्वारा दोनों पैर छीन लिए जाने पर उदयपुर में नारायण सेवा संस्थान द्वारा कृत्रिम पांव लगाए, चलने की ट्रेनिंग दी और कम्प्यूटर चलाने का प्रशिक्षण दिया। यही नहीं, गत 6 मार्च को संस्थान में सिलाई सीख रही सकलांग नीलवती के साथ उसका विवाह भी करा दिया।

संस्थान की निदेशक वंदना अग्रवाल और प्रास्थेटिक एण्ड ऑर्थोटिक प्रमुख डॉ. मानसरंजन साहू ने बताया कि कुछ दिन पहले नरेन्द्र ने संस्थान से अनुरोध किया कि पति-पत्नी संयुक्त व्यापार शुरू कर परिवार के 8 जनों का भरण पोषण करना चाहते हैं। इसके लिए उसे अपने गांव से 2-3 किलोमीटर रोजाना आना-जाना होगा। इतनी दूरी कृत्रिम अंग के सहारे तय करना दूभर है। इस पर संस्थान ने एक लाख लागत की बेट्री ऑपरेटेड मोटराईज्ड व्हीलचेयर नि:शुल्क भेंट की जो सड़क और घर दोनों जगह काम आ सकती है।

नाहर अध्यक्ष, पगारिया महामंत्री बने

उदयपुर (ह. सं.)। ओसवाल बड़े साजन सभा के पिछले दिनों चुने गए 51 सदस्यो की साधारण सभा ने रविवार 12 जून को पदाधिकारियों को चुना। मतदान में सबसे खास बात यह रही कि कुलदीप नाहर एक वोट से जीतकर अध्यक्ष बने। चुनाव संयोजक मोहन बोहरा ने बताया कि चुनाव में कुल 51 निर्वाचित सदस्य व दो संरक्षक सदस्यों सहित कुल 53 लोगों ने मताधिकार का प्रयोग किया। चुनाव में कुलदीप नाहर 27 मत प्राप्त कर अध्यक्ष तथा आलोक पगारिया 28 मत प्राप्त कर महामंत्री बने। उपाध्यक्ष अनिल कोठारी, सहमंत्री अशोक लोढ़ा, कोषाध्यक्ष गजेन्द्र जोधावत, कार्यसमिति सदस्य अनिल कटारिया, गजेन्द्र सामर, हर्षमित्र सरूपरिया, रवि मांडावत, संजय कावड़िया, ललित वर्डिया, नवीन मोदी, भगवतीलाल सुराणा, मन्नालाल सामर एवं मानसिंह पानगड़िया निर्वाचित हुए।

चुनाव अधिकारी हेमेन्द्र चंडालिया, सहायक चुनाव अधिकारी ओमप्रकाश मुथा ने पदधिकारियों को शपथ दिलाई। उल्लेखनीय है कि 5 जून को हुए चुनाव में भामाशाह के 25, वर्धमान के 22 व जय जिनेन्द्र गुप के 4 प्रत्याशी विजेता रहे थे।

आत्म-बलिदान का.....

(पृष्ठ एक का शेष)

एक हाथ में कटार लेकर व दूसरे हाथ में माला लेकर चित्त में परमात्मा को धारण किया। गोयंद ढोली मन्दिर के शिखर पर सूर्योदय की प्रतीक्षा में बैठा सोचने लगा, इतने सृजनधर्मी चारण मेरे डंके की चोट (ढोल के ढमके) पर एकसाथ आत्म-बलिदान करेंगे। वह रोमांचित हो गया। अर्द्ध सूर्य के दर्शन करते ही कटार गले में पहन कर उसने आत्मोत्सर्ग किया।

उसके साथ ही उस शिव की दरगाह में अपने द्विगुणित शौर्य के बल पर चारणत्व के मार्ग पर चलते हुए गले की राखड़ी (चारणों द्वारा काली ऊन का गले में धारण किया जाने वाला धागा) तोड़कर शिवलिंग पर चढ़ाते हुए कटार गले में धारण कर धागा करने लगे। कुछ बगल में कटारी के प्रहार कर तागा करने लगे। कुछ धरनार्थी सात-सात कटार शरीर में धारण कर आत्म-बलिदान करने लगे।

कुछ धरनार्थी तेलिया कर अग्नि स्नान के साथ हाथ में माला लेकर जलती मशाल की तरह सूर्य की तरफ कदम बढ़ाने लगे। कुछ धरनार्थी बैलगाड़ी में कपास भरकर उस पर तेल सींचकर स्वयं उस पर आरूढ़ हो अग्नि स्नान कर मन्दिर की परिक्रमा करते व माला फिराते जाते।

अन्य धरनार्थी मुखिया राष्ट्रकवि दुरसा आढ़ा के साथ उठ खड़े हुए तथा गले में कटारी धारण कर माला आगे कर दी। माला अगले हाथ में पहुंचते ही वह भी गले में कटारी धारण करने की धागा प्रणाली को दुहराता।

इस प्रकार माला फिरती रही तथा कटार के प्रहार चलते रहे। कभी-कभी सभी धरनार्थी एक साथ अपने शरीर पर कटार के प्रहार करने लगे। कुछ धरनार्थी पांव के अंगूठे से कटारी का प्रहार करते शीश तक प्रहार कर आत्मोत्सर्ग कर रहे थे।

इस धरने में सवालीस खिड़ियों, पैंतीस रोहड़िया बारहठों, बीस सांदुओं, सतरह रतनुओं, सौलह लालसों, नव आढ़ों, आठ कवियों, सात सिंढ़ायचों, पांच आसियों, चार देवलों, तीन मीसणों, दो बरसड़ों, दोगोडणों (बाप-बेटे), दो देथों, एक किनिया, एक सामौर, एक मेहडू, एक भादा, एक बीठू, एक जगट, एक बणसूर, एक बोगसा, एक दूल्हें के वेश में खिड़िया जो सौदा बारहठों का दामाद बनकर सूर्य के समान तेजस्वी रूप में उदित होकर सम्मिलित हुआ।

दूल्हे के वेश में यह नरवीर सांखड़ावास का जग्गा खिड़िया था। राष्ट्र की विभूतियों के इस आत्म-बलिदान का कारण बना जोधपुर का खलनायक राजा उदयसिंह जिसका नाम ही लोक ने अवाच्य करार दिया तथा वह अवाच्य नाम वाला राजा फिर भी निर्लज्ज ही बना रहा किन्तु यह अनाचार शिवलिंग भी सहन नहीं कर सका। शिवलिंग की एक शिप्र टूट कर राजा के लगी जिससे उसके अदीठ हो गया।

सारण के निर्मल पीर ने राजा को समझाया कि जप्त जागीरें चारणों को लौटा दो अन्यथा विनाश हो जाएगा। राजा सारण पहुंचा व पीर के चरणों में गिरा। इस प्रकार लगभग 185 व्यक्तियों ने इस धरने में अपने प्राणों की आहूति दी तथा अनेक घायल हुए।

उस युग के महान चारण शंकर बारहठ ने मारवाड़ का पानी तलाक दिया। उसे बीकानेर के महाराजा रायसिंह ने 210 गांवों सहित फलौदी प्रदान की जहां उसने बचे हुए धरनार्थियों एवं छह वर्गों के परिवारों के रहने-खाने की व्यवस्था की तथा यश कमाया। बीकानेर के राजा ने उसे इस यश के कारण सवा करोड़ का पुरस्कार देकर पांडवसर (चूरू) एवं नागौर का पट्टा दिया। धागा करने के बाद भी देवी कृपा से राष्ट्रकवि दुरसा आढ़ा बच गया।

उसने दिल्ली दरबार में सरे आम मोटे राजा को लज्जित किया। गले में कटारी का घाव खाने से दुरसा आढ़ा के गले की आवाज विकलांग हो गई। इस पर अकबर ने पूछा, कविवर आवाज कैसे बिगड़ी? दुरसा ने कहा, कुत्ते ने काट लिया।

अकबर ने जिज्ञाशावश पूछा, इतना बड़ा कुत्ता? तो दुरसा ने मोटे राजा की तरफ इशारा करते हुए कहा, आपके सामने ही तो खड़ा है। सांखड़ावास (पाली) का दूल्हे के वेश में धरने में शामिल होने वाला खिड़िया जग्गा भी धरनार्थियों के आशीर्वाद से स्वयं एवं पिता के हिस्से की कटार खाकर भी जीवित बच गया। माला सांदू इस धरने से विमुख होकर मोटे राजा का साथ देने के कारण लोक-निन्दा का पात्र बना तथा लोक-बहिस्कृत रहा।

पत्रकारिता की.....

(पृष्ठ तीन का शेष)

उसके बाद भी जब उदयपुर से 'दैनिक भास्कर' का प्रकाशन शुरू हुआ तो उसमें भी सन् 2005-06 में मैंने 'जानिए शहर को' नाम से एक कॉलम लिखा जिसमें उदयपुर से जुड़ी लोककंठों पर तैरती विविध घटनाओं से जुड़े प्रसंग लिखे जो लोकजीवन और सांस्कृतिक इतिहास को उजागर करने वाली खोजपरक सामग्री लिये थे। इस कॉलम के बाद भी मैं ऐसे घटना-प्रसंगों को एकत्र करता रहा और यह संख्या 125 तक पहुंची।

उदयपुर में रहते मैंने रंगायन, लोककला, शोधपत्रिका, सुलगते प्रश्न तथा पर्यटन दिग्दर्शन नामक पत्रिकाओं का संपादन किया। इनमें साप्ताहिक, मासिक, अर्द्धवार्षिक और त्रैमासिक सभी तरह की पत्रिकाएं थीं। इनके प्रकाशक और स्वामी अन्य व्यक्ति थे। यही सोच कर मैंने अपने संपादन में अपना निजी 'पीछोला' नामक पाक्षिक पत्र नवम्बर 1979 में प्रारंभ किया। इस पत्र के 15 अंक ही प्रकाशित हो पाए जिसके पीछे मात्र आर्थिक पक्ष की ही दुर्बलता थी। इसका प्रवेशांक ही बच्चों के लिए विशेष सामग्री लिए था। संपादकीय में मुखपृष्ठ पर मैंने पीछोला प्रकाशन के दृष्टिकोण बाबत् लिखा- ''हम चाहते हैं, पीछोला एक रुचिसम्पन्न और दृष्टिवादी पत्र बने। लीक से कुछ हटकर ताजगी और ऐसी सुवास भी यह दे जिसकी आम पाठक को तलाश है। यह बहुत कुछ हमारे पर भी निर्भर करेगा कि हम कितना कुछ (पी) पी पाते हैं, (छो) छोड़ पाते हैं, (ला) लाने की सामर्थ्य खोज पाते हैं।''

इन 15 अंकों में चार तो विशेषांक ही दे दिये जिनमें क्रमश: लोकतंत्र विशेषांक (अंक 6), होली विशेषांक (अंक 8), आदिवासी युवा संस्कृति विशेषांक (अंक 9) एवं प्रताप जयंती विशेषांक (अंक 15) उल्लेखनीय हैं। प्रथम अंक के लोकार्पणकर्ता पं. जनार्दनराय नागर ने कहा था- ''मैं जो उम्मीद करता था, पीछोला में उसका सारा शिलान्यास हो चुका है।''

पीछोला के अंकों में तीन महत्वपूर्ण साक्षात्कार बड़े चर्चित रहे जो मैंने तथा डॉ. विश्वंभर व्यास ने लिए थे। उनमें पहला मोहनलाल सुखाड़िया से संबंधित था जो सत्रह वर्षों तक लगातार राजस्थान के मुख्यमंत्री रहे। उनका यह साक्षात्कार 'चाहता हूं, उदयपुर हमेशा फलेफूले' शीर्षक से अंक दो में प्रकाशित हुआ। दूसरा उपन्यासकार जैनेन्द्र से संबंधित था जो अंक 13 में छपा। इसका शीर्षक था- 'मेरा जो उपन्यास सबसे कम चर्चित हुआ वही सबसे अच्छा।' तीसरा साक्षात्कार डॉ. गोपीनाथ शर्मा से लिया गया था जो 'क्या प्रताप कायर थे?' शीर्षक से अंक 15 में प्रकाशित हुआ।

प्रताप जयंती विशेषांक में कविवर कन्हैयालाल सेठिया ने हल्दीघाटी शीर्षक से कविता भेजी वहीं प्रसिद्ध कवि श्यामनारायण पांडे ने मुझे एक पोस्टकार्ड पर प्रताप संबंधी चार पंक्तियां लिखकर भेजीं जो थीं-

राणा की पद धूलि उठाकर,
मस्तक पर चंदन कर लो।
राष्ट्र देवता के चरणों में,
झुको झुको वंदन कर लो।।

सन् 2013 से सोहनलाल भानावत ने 'पब्लिक पड़ताल' नामक साप्ताहिक पत्र प्रारम्भ किया। इसमें मैं 'गांव की गंध' नाम से एक स्तंभ लिख रहा हूं। इसी प्रकार मेरे ही आत्मज डॉ. तुक्तक भानावत ने 15 जनवरी 2015 से पाक्षिक 'शब्द रंजन' का शुभारम्भ किया। इसमें मेरा 'स्मृतियों के शिखर' नाम से लिखा जा रहा स्तंभ व्यापक तौर पर प्रबुद्ध पाठकों की पसंद बना हुआ है।

-समाप्त

गाल ब्लैडर में हुए ट्यूमर का सफल इलाज

उदयपुर (ह. सं.)। गीतांजली मेडिकल कॉलेज एंड हॉस्पिटल की गैस्ट्रोएंटरोलॉजी टीम द्वारा 80 वर्षीय वृद्ध महिला रोगी की सफल रेडिकल कोलेसिस्टेक्टोमी लेप्रोस्कोपिक सर्जरी की गई। इस अत्यंत जटिल ऑपरेशन को करने वाली टीम में जी.आई सर्जन डॉ. कमलकिशोर बिश्नोई, गैस्ट्रोएंटेरोलॉजिस्ट डॉ. पंकज गुप्ता, डॉ. धवल व्यास, डॉ. मनीष दोड़मानी, एनेस्थेसिस्ट डॉ. पूजा, एसआईसीयू इंचार्ज डॉ. संजय पालीवाल, ओटी इंचार्ज हेमंत गर्ग, आईसीयू स्टाफ ओटी स्टाफ का योगदान रहा।

डॉ. कमलकिशोर ने बताया कि डूंगरपुर निवासी 80 वर्षीय वृद्धा को एक माह से पेट दर्द की समस्या थी। सोनोग्राफी करने पर पता चला कि रोगी के गालब्लैडर में पथरी है और एक गाँठ जैसा प्रतीत हुआ जिस पर सीटी स्कैन किया गया। रिपोर्ट में रोगी के गालब्लैडर में कैंसर की पुष्टि हुई। रोगी की उम्र ज्यादा होना ऑपरेशन की सबसे बड़ी चुनौती थी। लगभग 3 घंटे तक लेप्रोस्कोपिक सर्जरी चली, जिसमें सभी लिम्फनोड निकाल दिए गए और साथ ही लीवर के दोनों सेगमेंट भी निकाल दिए गए। रोगी को मात्र एक दिन आईसीयू में रखा गया। चौथे दिन रोगी को डिस्चार्ज कर दिया गया। रोगी अब स्वस्थ है।

डॉ. छतलानी सीरिया के फोरम द्वारा सम्मानित

उदयपुर (ह. सं.)। सीरिया, मध्य पूर्व के संस्थान इंटरनेशनल कल्चरल फोरम ऑफ ह्यूमैनिटी एंड क्रिएटिविटी द्वारा जनार्दनराय नागर राजस्थान विद्यापीठ (डीम्ड टू बी विश्वविद्यालय) के सहायक आचार्य डॉ. चंद्रेशकुमार छतलानी को प्रेस व मीडिया की आज़ादी के लिए शेरिन अबू अकलेह सम्मान प्रदान किया गया।

यह सम्मान उन्हें बहादुरों के मनोबल और संघर्ष को बढ़ाने और सामान्यीकरण की अस्वीकृति के विरोध में उनकी साहित्यिक और ई-मीडिया सम्बंधित गतिविधियों में योगदान हेतु इंटरनेशनल कल्चरल फोरम ऑफ ह्यूमैनिटी एंड क्रिएटिविटी के संस्थापक अध्यक्ष डॉ. अयमन कोदरा डेनियल, उपाध्यक्ष समीरा अल्माराद्नी, महासचिव खोलौद अहू रीदा ने प्रदान किया।

कुलपति प्रो. कर्नल एस. एस. सारंगदेवोत ने बधाई देते हुए कहा कि डॉ. छतलानी साहित्य, सोशल मीडिया व इन्टरनेट द्वारा इन कार्यों को संपन्न कर रहे हैं, जो कि नि:संदेह सराहनीय हैं। डॉ. छतलानी ने अपने साहित्यिक लेखन में भी मीडिया सशक्तिकरण और जागरूकता पर काफी कार्य किया है।

अभिभावकों और संतानों के बीच दूषित विचारों को दूर करने की जरूरत : मेवाड़

उदयपुर (ह. सं.)। तारा संस्थान का 12वां स्थापना दिवस हिरणमगरी सेक्टर-6 में मनाया गया। मुख्य अतिथि मेवाड़ के पूर्व राजपरिवार के सदस्य

लक्ष्यराजसिंह मेवाड़ ने कहा कि अपने-अपने घरों और बेटे-बेटियों से बिछड़कर तारा संस्थान में रह रहे सभी बुजुर्गों के चेहरे पर खुशी देखकर महसूस हो रहा है कि यहां सभी एक परिवार की तरह रह रहे हैं।

लक्ष्यराजसिंह ने कहा कि जैसे नन्हे-नन्हे पौधों को प्रतिदिन सींचकर, रखरखाव कर उन्हें बड़े करते हैं। उनमें पत्तियां और पुष्प पल्लवित होते हैं। फिर लंबे अरसे बाद फल प्राप्त होते हैं। हम सबके माता-पिता हम सबके जीवन को इसी तरह हराभरा कर पल्लवित करते हैं। जब उनको फल प्राप्ति की जरूरत होती है तब वे इससे क्यों वंचित कर दिए जाते हैं? अभिभावकों और उनकी संतानों के बीच फासला पैदा करने वाले दूषित विचारों को दूर करने की जरूरत है। इस संसार में माता-पिता की सेवा ही सबसे बड़ा धर्म है। हर व्यक्ति और हर समाज को धरोहर रूपी बुजुर्गों की सेवा-सुश्रुशा के लिए बढ़-चढ़कर आगे आने की जरूरत है। इस दौरान लक्ष्यराजसिंह ने तारा संस्थान में निवासरत सभी बुजुर्गों को सिटी पैलेस में भोजन पर आमंत्रित किया। कार्यक्रम में तारा संस्थान की अध्यक्ष कल्पना गोयल और सचिव दीपेश मित्तल भी मौजूद थे।

राजस्थानी लोककलाओं का सर्वेक्षण (13)

- डॉ. महेन्द्र भानावत -

मोहनजी पुरोहित ने भी 'सांगीत रूपवती उर्फ मंत्र का महत्त्व' ख्याल की रचना की। सभी ख्याल अप्रकाशित हैं। यदाकदा शौकिया रूप में होली पर इन ख्यालों के प्रदर्शन अब भी देखे जा सकते हैं। कलाकारों में मोतीलाल, उमरूद्दीन, बदरीप्रसाद, बचना; विरदीचंद, हकीम मीर, चौथमल, कानीराम, नत्थूसिंह, लीलाराम, लालचन्द, भानाराम, गोविन्दराम आदि उल्लेखनीय हैं।

कच्छीघोड़ी :

कच्छीघोड़ियां भी रामगढ़ की बड़ी कलात्मक रही हैं। इनके माध्यम से मुगलों तथा मराठों का युद्ध दिखाया जाता है। इससे स्पष्ट है कि इनका प्रारम्भ मुगल-मराठा युद्ध से हुआ। दो घोड़ियों के नाच में ढोल-ताशा तथा झांझ नामक तीन वाद्यों के लिए तीन व्यक्ति, दो घोड़ी वाले तथा दो पैदल; इस प्रकार सात व्यक्ति काम करते हैं। चार घोड़ियों के नाच में दुगुने यानी चौदह व्यक्ति होते हैं। बांस की खपच्चियों पर कागज पन्नी आदि लगाकर नचैये घोड़ियां स्वयं ही तैय्यार कर लेते हैं। इनमें घोड़ीवाला मराठा तथा पयादा मुगल होता है। दोनों आमने-सामने नहीं लड़ कर एक दूसरे से तिरछे लड़ते हैं।

उदयपुर में भारतीय लोककला मण्डल द्वारा आयोजित लोकानुरंजन समारोह तथा गणतंत्र दिवस पर दिल्ली में आयोजित झांकी प्रदर्शन में भी यहां के कच्छीघोड़ी नर्तकों ने बड़ा नाम कमाया। वर्तमान में यहां जारू अजमेरी तेली, झालू झल्ला तेली, सुलेमान इलाइबगस अब्दुल्ला अबरू गहलोत, हुसैन महम्मद, महम्मद अलाद्दीन, लाला कालू, गन्नी अब्दुल्ला आदि उस्ताद कलाकार हैं।

चिड़ावी ख्याल :

उमरदीन इलाही उम्र में यद्यपि 50 वर्ष से अधिक नहीं हैं पर शरीर से इतने थके मांदे हैं कि पूरे 80 वर्ष के दिखाई देते हैं। चलना-फिरना तो इनके लिए अभिशाप बना हुआ है। तपती धूप में दिन में जब हम इनके मकान पर गये तो हमारा आना सुन इन्हें बड़ा आनन्द हुआ। भोजन करते हुए अपने घर से निकलते ही ये पांवों से सटे-सटे बाहर चौक में चले आये। हमने कहा कि हम चिड़ावा के नानू के ख्यालों के सम्बन्ध में पूछताछ करने राणाजी के उदयपुर से यहां आए हैं तो अपने गुरु के सम्बन्ध में पूछताछ करने की बात पर उनके चेहरे पर सुखानन्द की रेखाएँ लोटपोट होती हुई दिखाई दीं। उन्होंने बताया कि नानू के पोते लादू की मण्डली में उमरदीनजी ने 12 वर्ष काम किया। इसमें बड़ा जनाना ये ही बनते थे। इनके साथ विलास तथा उसका लड़का केदारिया भी माना हुआ कलाकार था। लादू के पाकिस्तान चले जाने के कारण मण्डली बिखर गई। इनके द्वारा प्रदर्शित नानू लिखे जगदेव कंकाली, हीर-रांझा, पूरणमल, ढोला-मरवण, विराट पर्व, चकवा बैण, बीन बादशाह शाहजादी, सौदागर वजीरजादी ख्याल इन्हें अब भी कंठस्थ हैं।

नानू के देखादेख उजीरा ने भी ख्यालों की रचना की पर दोनों की बणगट में बहुत भिन्नता है। नानू ने अपने ख्याल कवित्त, शेर, झड़ दूहा, लावणी, चौबोला, दुबोला, झेला आदि में लिखे जबकि उजीरा ने अपने ख्यालों में शेर को ही अधिक अपनाया। उजीरा के ख्यालों में नरसी का भात, सुलतान का भात, बदर मुकुट, अमरसिंह, मालदे हाडी राणी, विरमदे सोनगरा आदि ने बड़ी प्रसिद्धि पाई। चिड़ावा के घनश्यामदास ब्राह्मण, नानू तथा उजीरा दोनों के गुरु थे। नृत्य की शिक्षा नानूजी ने गोविन्दराम दर्जी से पाई।

फतहपुर के झालीराम नागोर से ओडिया रंगत के नागोरी चाल के दूहे लाये और उन्होंने उनके आधार पर ख्यालों की रचना प्रारम्भ की। बातों ही बातों में उमरदीनजी में अपने ख्याल जीवन की सारी स्मृतियां उभर आई। उनका हृदय गद्‌गद् हो गया और आँखों से अश्रु छलक पड़े। शरीर से जर्जर होने पर भी फिर से उनमें अपने ख्याली जीवन का जोश, यौवन और उन्माद फूट पड़ा। उठने चलने में पूर्णतया असमर्थ इलाही उठ बैठे और अपने ख्याली जनाने की बुलंद स्वरलहरी के साथ नाना भावभंगिमाओं में गरजते हुए सुध-बुध ही भूल गये। सच्चे माने में साधक कलाकार तो ये हैं जिन्होंने अपनी कला- साधना के पीछे अपना सर्वस्व होम कर दिया और आज भी, मृत्यु शैय्या पर भी, जिनका रोम-रोम कला के नाम पर झंकृत हो उठता है। उनके दीर्घजीवी स्वास्थ्य की कामना करते हुए हमने उनसे विदा ली।

नगरश्री चुरू :

यहाँ के सत्यनारायणजी सराफ के पास ख्यालों की लगभग एक हजार पुस्तकों का अनूठा संग्रह बताया जाता है। रात्रि 7 बजे हम चुरू पहुँचे। यहां स्टेशन पर धर्मशाला में अपना सामान रखकर हम शहर में गोविन्दजी अग्रवाल से भेंट करने चल पड़े। इनकी 'आपणी दूकान' तथा 'नगरश्री' का

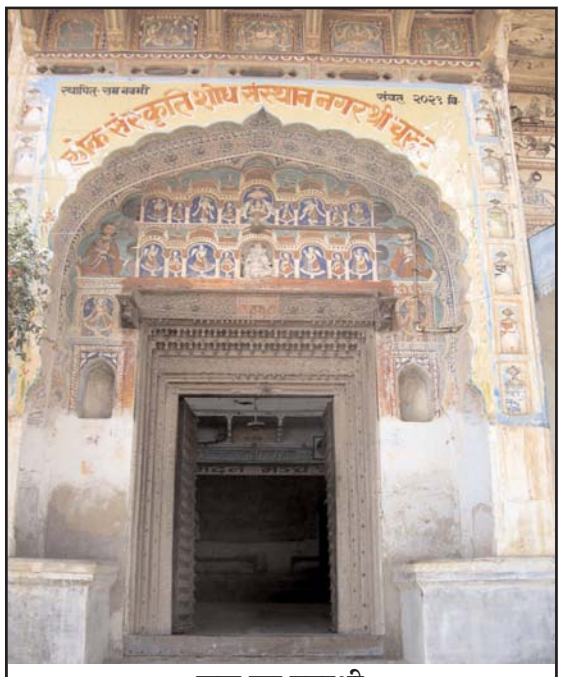

चुरू का नगरश्री

कार्यालय बन्द था। अत: ढूंढ़ते इनके घर पहुंचे। यहां इनके बड़े भाई सुबोधजी से हमारी भेंट हुई। परिचय की दृष्टि से पहले हम न तो सुबोधजी से परिचित थे और न गोविंदजी से ही। पत्राचार अवश्य कर रखा था इसलिए बिना पूछताछ के ही उन्होंने हमारा परिचय पा लिया और गोविंदजी से साक्षात्कार कराया। उनके शरीर पर कोई भी चिन्ह 'साहित्यकार' का संकेत नहीं दे रहा था। अत्यन्त सीधे-सादे, विनीत, सरल और शान्त गोविंदजी की ऐसी कल्पना मेरे मन में इससे पूर्व पहले कभी नहीं थी।

वे हमें ऊपर 'नगरश्री' में ले गये। अल्प समय में हमने नगरश्री का अवलोकन किया और वहीं से सुबोधजी के साथ हम मास्टर श्रीनिवासजी के मकान पर पहुंचे। इस समय घड़ी रात की 10 बजा रही थी। मास्टरजी के वहां देर रात तक भी गीत-गालों की बड़ी अच्छी चहल-पहल थी। पता लगा कि आज उनके सुपुत्र की जन्मगांठ है। हम उनके कमरे में पहुंचे। सुबोधजी ने मास्टरजी से हमारा परिचय कराया। हमने जन्मगांठ की अपनी शुभकामनाएं व्यक्त की और छककर अपना मुंह मीठा किया। मास्टरजी को जब हमने अपना मंतव्य दिया तो उन्होंने कहना प्रारम्भ किया-

गींदड़ :

पहले यहां ठिकाने की एक ही गींदड़ गाली जाती थी। उसमें 200-300 तक व्यक्ति भाग लेते थे। बढ़िया मण्डप सजाया जाता था। नचैये अपने हाथों में डंकों के रूप में मरगोजे (फाल्गुन में धरती से फूटकर निकलने वाली लकड़ी विशेष) रखते थे। जब गींदड़ अच्छी जम जाती तो नचैयों के बीच मण्डप के पास एक लूर गाने वालों का दल चल पड़ता। प्रत्येक व्यक्ति अपना-अपना जोड़ा बनाकर नानाप्रकार के स्वांग धारण कर इसमें चारचाँद

गींदड़ नृत्य करते कलाकार

लगाते थे।

मशाल के रूप में पहले सीपतड़ा (खेजड़ी पर लकड़ी का गोला विशेष) लाकर 5-10 दिन तक तेल में भीगो दिया जाता था और तब उसे काम में लाया जाता था। इससे प्रकाश तेज तथा दूर-दूर तक बिखरा हुआ रहता था। गुलाब माली तथा मालजी नाई साठ-साठ कलियों के ऊपरा-ऊपरी चार-चार घाघरे पहनकर अपनी गैर जमाते थे। भीमा खटीक तथा मालजी ढांचोलिया के स्वांग देखते ही बनते थे। नगारा बजाने में गोकुल कोठारी एक ही था। लगातार तीन-तीन घण्टे तक गींदड़ का समा बन्ध जाता था। लूरें गाने में लूणजी, सत्तु, घीसा खाती, नार गुजर तथा परमेश्वर पारीक ऊँचे कलाकार थे। इसमें सभी व्यक्ति दिल खोलकर भाग लेते थे। जात-पांत का कोई भेदभाव नहीं था। यहां की तीन-तीन सौ वर्ष पुरानी हवेलियों में गींदड़ के भित्तिचित्र आज भी देखने को मिलते हैं।

चीरानृत्य :

सुजानगढ़, रामगढ़ तथा चुरू का चीरानृत्य भी बड़ा प्रसिद्ध रहा है। विवाह शादी पर वेश्या पुरुष वेश धारण कर यह नृत्य करती थी। वेश्या अपने सिर पर जो पगड़ी धारण करती थी वह चीरा नामक विशेष बंधेज लिए होती थी, इसलिए इस नृत्य का नाम चीरा पड़ा कहा जाता है। इसके साथ तबले सारंगी आदि बजाये जाते थे। जोधपुर, बीकानेर की ओर भी यह नृत्य बड़ा प्रसिद्ध था। भित्तिचित्रों में इसके कई चित्र आज भी देखने को मिलते हैं।

चौक-चानणियां :

गुरु एकादशी से गणेश चतुर्थी तक चौक-चानणियों का यहां मेला सा लग जाता था। इनमें अधिकतर स्वांग देवी-देवता विषयक होते थे। बच्चे नगारे के साथ नाचते-कूदते अपनी-अपनी चटशालाओं से नाना स्वांगों में निकल पड़ते थे। उनके एक हाथ में डंडा तथा दूसरे में रस्सी वाला गोटे किनारी का काम किया हुआ सुन्दर बटुआ रहता था।

नगाड़े की चाल पर गींदड़ की भांति लड़के चकरियां भरते हुए फूले नहीं समाते थे। प्रत्येक चटशाला की अलग-अलग चांदणी होती थी। गुरुजी बच्चों को लेकर प्रत्येक के घर जाते। तिलक करवाते और दक्षिणा प्राप्त करते थे। चौक च्यानणी की गजलें भी बहुत चलती थीं जो इन्हीं गुरु लोगों द्वारा बनाई जाती थी जिनमें शहर के मुख्य-प्रमुख सौंदर्य स्थलों का संश्लिष्ट चित्र वर्णित रहता था। यहां कालीचरण, धन्ना गुरु तथा हनुमान की चौक च्यानणियां प्रचलित हैं।

इधर डेरू तथा मशक वाले भोपे भी यत्र-तत्र देखने को मिलते हैं। ढपलियों का नाच भी इधर का बड़ा प्रसिद्ध रहा है। यहाँ का रामू माली ढप बजाने का बड़ा नामी कलाकार था जो कुछ वर्ष पूर्व 80 वर्ष की उम्र में मृत्यु को प्राप्त हुआ। यह ऊँची धोती, ऊँचा साफा, जाकेट तथा पाँव में चांदी का कड़ा पहनता था। आँख में काजल आंजता तथा तेल में तृप्त देशी जूतियां पहन कर पड़त तथा चलत की धमाल पर ढपलियों को हवा से बातें कराता था।

- क्रमश

स्वत्वाधिकारी प्रकाशक डॉ. तुक्तक भानावत द्वारा 352, कृष्णपुरा, सेंटपॉल स्कूल के पास, उदयपुर - 313001 (राज.) से प्रकाशित एवं मुद्रक लोकेश कुमार आचार्य द्वारा मैसर्स पुकार प्रिंटिंग प्रेस 311-ए, चित्रकूट नगर, भुवाणा, उदयपुर (राज.) से मुद्रित। सम्पादक : रंजना भानावत। फोन : 0294-2429291, मोबाइल - 9414165391, Email : shabdranjanudr@gmail.com, drtuktakbhanawat@gmail.com, सर्व विवादों का न्याय क्षेत्र उदयपुर होगा।